आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थसत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुगंधा

44 वाँ अंक
अक्टूबर 2024 से मार्च 2025

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017

कुर्सियों पर बाएं से:
श्री पुष्पेन्द्र गहलोत (उप महालेखाकार), सुश्री ललिता शर्मा (उप महालेखाकार)
सुश्री नाज़ली जे. शाईन (प्रधान महालेखाकार), सुश्री रनदीप कौर औजला (व. उप महालेखाकार)
सुश्री निधि (उप महालेखाकार), सुश्री एकता (सहायक निदेशक, राजभाषा),

खड़े हुए बाएं से:
श्री आशीष कुमार जाँगीड़ (कनिष्ठ अनुवादक), सुश्री प्रियंका (कनिष्ठ अनुवादक),
श्री गुरदीप कुमार (कनिष्ठ अनुवादक), श्री महेंद्र सिंह (वरिष्ठ अनुवादक)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थसत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सुगंधा

44 वाँ अंक
अक्टूबर 2024 से मार्च 2025

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक	:	**सुश्री नाज़ली जे. शाईन** प्रधान महालेखाकार
संरक्षक	:	**श्री पुष्पेन्द्र गहलोत** उप महालेखाकार (प्रशासन)
संपादक	:	**सुश्री एकता** सहायक निदेशक (राजभाषा)
संपादन सहयोग	:	**श्री महेंद्र सिंह** वरिष्ठ अनुवादक **श्री गुरदीप कुमार** कनिष्ठ अनुवादक **श्री आशीष कुमार जाँगीड़** कनिष्ठ अनुवादक **सुश्री प्रियंका** कनिष्ठ अनुवादक
मुख पृष्ठ	:	**वॉर मेमोरियल, चंडीगढ़** (सौजन्य – इंटरनेट)
अंतिम पृष्ठ	:	**रॉक गार्डन, चंडीगढ़** (सौजन्य – अनूप पुनियाँ)
अंक	:	**44वाँ अंक**
प्रकाशक	:	**राजभाषा कार्यान्वयन समिति,** कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब, चण्डीगढ़ – 160017
मूल्य	:	**राजभाषा के प्रति निष्ठा।**
मुद्रक	:	**कैपिटल ग्राफिक्स** एस.सी.ओ. 133–135, सैक्टर 17–सी, चण्डीगढ़।

नोटः रचनाकारों के विचारो से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं हैं। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

अनुक्रमणिका

प्रकाशन विवरण		2
अनुक्रमणिका		3
संदेश		4–8
मुख्य संरक्षक का संदेश		9
संरक्षक का संदेश		10
संपादकीय		11
पाठकों के पत्र		12
आलेख व कहानी		
हिंदी के प्रयोग में ए. आई. और मशीन अनुवाद की भूमिका	अनूप पुनियाँ	14–20
खुशी	तुषार कांती सिन्हा	21–22
कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): मानवता के भविष्य की क्रांति	आयुष अरोड़ा	23–25
भगवान और इन्सान के बीच दीवार	सिकन्दर कुमार	26–31
मेरा प्रिय विषय –ज्योतिष	विशेष बिस्वाल	32–33
मधुर वाणी	सुदेश कुमार	34
हिंदी : हमारी पहचान	दिनेश	35
पासवर्ड देवता	महेन्द्र सिंह	36–39
कविता		
आज़ादी की पुकार	अर्चिता	47
गणतंत्र दिवस पर मेरी अभिलाषा	राजीव सूद	48
प्रशासन	तमन्ना सहगल	49–50
पांचाली की पुकार / सीता की परीक्षा	आयुष अरोड़ा	51
छोटी–छोटी बातें	मुकेश कुमार	52
सरकारी नौकरी / रफ्तार	तुषार कांती सिन्हा	53
अन्तर्मन	पवना देवी	54
किस ओर जा रही है दुनिया	रुपाश शर्मा	55
खुद पर राही भरोसा तो कर	दीपक सिवाच	56
दिल की भाषा	मानसी दुबे	57
विनाश लीला	एकता	58
कार्यालयीन समाचार		
कार्यालय में आयोजित की गई गतिविधियाँ		59
सेवानिवृत्तियां		60

सत्यमेव जयते

संदेश

संजीव गोयल
महानिदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा सेवाएँ
चण्डीगढ़

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि हमारे कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' का 44वाँ अंक शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार का माध्यम है, बल्कि हमारे अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक अभिव्यक्ति को भी प्रोत्साहित करती है।

'सुगंधा' के माध्यम से हमारे सहयोगियों की साहित्यिक प्रतिभा, विचारशीलता और सांस्कृतिक भागीदारी की झलक मिलती है। ज्ञानवर्धक लेखों, कविताओं और गतिविधियों का समावेश इस पत्रिका को अत्यंत पठनीय और प्रेरणादायक बनाता है।

राजभाषा हिंदी को सशक्त बनाने की दिशा में यह प्रयास सराहनीय है। मैं इस सुंदर पहल के लिए संपादकीय टीम और सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि 'सुगंधा' निरंतर गुणवत्ता और लोकप्रियता की नई ऊँचाइयों को छूती रहेगी।

आप सभी को शुभकामनाएँ।

संजीव गोयल

सत्यमेव जयते

संदेश

नवनीत गुप्ता
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हरियाणा

यह प्रसन्नता का विषय है कि आपके कार्यालय के द्वारा राजभाषा हिंदी की गृह पत्रिका 'सुगंधा' के 44वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका निपुण संपादन में अपने नाम के अनुरूप ज्ञान एवं साहित्य की सुरभि बिखेरती रहेगी।

यह पत्रिका आपके कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों एवं विभागीय क्रियाकलापों से अवगत कराने के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में भी उल्लेखनीय भूमिका निभा रही है। पत्रिका में ज्ञानवर्धक एवं सुरुचिपूर्ण कविता, कहानी, लेख, लघु कथा, संस्मरणों के साथ–साथ विभिन्न साहित्यिक विधाओं को शामिल किया जाना इसका परिचायक है कि 'सुगंधा' आज के डिजिटल युग में भी अपनी गुणवत्ता एवं प्रासंगिकता को बनाए रखने में समर्थ है।

कार्यालय के कार्मिक पत्रिका को सुदृढ़ करने में अपना कुशल एवं अनुपम योगदान दे रहे हैं। इस दिशा में पत्रिका के माध्यम से आप सबके द्वारा लम्बे समय से किए जा रहे निरंतर प्रयास सराहनीय एवं अनुकरणीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन एवं हिंदी के प्रचार–प्रसार में 'सुगंधा' पत्रिका सहायक सिद्ध होगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल तथा पत्रिका से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को उनके इस प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

नवनीत गुप्ता

सत्यमेव जयते

संदेश

आशुतोष शर्मा
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा

मुझे यह जानकर हर्ष हो रहा है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के नवीनतम अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। हिंदी पत्रिकाएं सृजनात्मक अभिव्यक्ति के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में भी सहायक सिद्ध होती हैं।

भारतीय संस्कृति अनेक भाषाओं से जडित मुकुट के समान है और हिंदी उनमें मुकुटमणि के रूप में विद्यमान है। हिंदी न केवल आम आदमी की भाषा है बल्कि विज्ञान, उद्योग और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढ़ रही है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी हिंदी के महत्व को पहचाना जा रहा है। परिणामस्वरूप विश्व के कई देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है। हम सबका यह संवैधानिक और नैतिक दायित्व है कि कार्यालयीन कार्य में अधिकाधिक सहज और सरल हिंदी का प्रयोग करें।

आशा है कि 'सुगंधा' पत्रिका का यह अंक भी ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर होगा। पत्रिका परिवार के प्रयासों की सराहना करते हुए पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

आशुतोष शर्मा

सत्यमेव जयते

संदेश

के.एस. रामुवालिया
महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
चण्डीगढ़

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 44 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। हिंदी भाषा राष्ट्र की एकता एवं अखंडता का प्रतीक है तथा राजभाषा के रूप में इसका प्रयोग हम सभी का कर्तव्य भी है। हिंदी सांस्कृतिक एवं सामाजिक परम्परा की धनी है और विचारों में भावों की अभिव्यक्ति में भी पूर्ण सक्षम है। आपकी यह पत्रिका न केवल राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने का एक सशक्त माध्यम है अपितु अधिकारियों/कर्मचारियों की रचनात्मकता, अभिव्यक्ति की क्षमता एवं हिंदी लेखन शैली को भी प्रोत्साहित करती है।

मैं आशा करता हूँ कि आपका यह प्रयास न केवल हिंदी भाषा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा बल्कि पत्रिका की गुणवत्ता में भी वृद्धि करेगा और कार्यालय में हिंदी भाषा के प्रयोग को भी प्रोत्साहित करेगा ।

शुभकामनाओं सहित ।

के.एस. रामुवालिया

सत्यमेव जयते

संदेश

तृप्ति गुप्ता

महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू. टी., चंडीगढ़

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' के 44 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े हुए सभी रचनाकारों, पाठकों और सह संपादक मण्डल को बधाई देती हूँ।

कार्यालयीन पत्रिकाएं कार्यालय में हिंदी में काम करने की प्रेरणा को बढ़ावा देती हैं। विभागीय पत्रिकाएं हिंदी के प्रचार–प्रसार की रीढ़ हैं। हिंदी पत्रिकाएं विभाग से जुड़े लोगों को अपने विचार प्रकट करने के लिए एक मंच प्रदान करती हैं। ये पत्रिकाएं विभिन्न कार्यालयों के मध्य एक सेतु का कार्य करती हैं, जिससे कार्यालयों में होने वाली गतिविधियों की समय–समय पर जानकारी मिलती रहती है। हिंदी न केवल सरकारी काम–काज की भाषा है बल्कि पूरे देश में विचार प्रस्तुत करने का सबसे सशक्त माध्यम है। मुझे आशा है कि 'सुगंधा' पत्रिका भविष्य में भी हिंदी भाषा को और सशक्त बनाने में अपना योगदान देती रहेगी।

'सुगंधा' पत्रिका के उत्कृष्ट संपादन एवं सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पुनः शुभकामनाएं देती हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

तृप्ति गुप्ता

सत्यमेव जयते

मुख्य संरक्षक का संदेश

नाज़ली जे. शाईन
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

मुझे यह जानकार अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है कि कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'सुगंधा' का 44 वां अंक प्रकाशित हो रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई देती हूँ।

राष्ट्र की सांस्कृतिक एकता और राष्ट्र की पहचान बनाये रखने वाली राजभाषा हिंदी देश के लिए एकता का प्रतीक है, जो सदियों से लोगों को जोड़ने का काम कर रही है और 'सुगंधा' पत्रिका इसमें अहम भूमिका निभाती आ रही है। 'सुगंधा' पत्रिका कार्यालय के कार्मिकों के सकारात्मक विचारों का प्रतिबिम्ब है। मैं आशा करती हूँ कि हर बार की तरह इस बार भी 'सुगंधा' पत्रिका पाठकों के राजभाषा के प्रति प्रेम व निष्ठा को बनाये रखने में सहायक सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकार, संपादन मंडल एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

नाज़ली जे. शाईन

सत्यमेव जयते

संरक्षक का संदेश

पुष्पेन्द्र गहलोत
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा) पंजाब, चंडीगढ़

विभागीय पत्रिका सुगंधा के 44 वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए मैं सभी को बधाई देता हूँ। कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'सुगंधा' सदैव राजभाषा के प्रचार–प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई है। रचनाकारों ने भी राजभाषा के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को लेखनी के माध्यम से कागज पर उतारा है। कार्यालयीन पत्रिकाएं न केवल राजभाषा के प्रचार–प्रसार का उत्तम स्त्रोत होती हैं अपितु कार्यालय के कार्मिकों की राजभाषा के प्रति भावों की अभिव्यक्ति भी होती है।

विभागीय पत्रिकाओं का उद्देश्य कार्यालयों की गतिविधियों से दूसरे कार्यालयों को अवगत करवाने के साथ–साथ भाषाई एकता को स्थापित करना भी है जिसमें सुगंधा पत्रिका सदैव सफल रही है। 'सुगंधा' पत्रिका राजभाषा के प्रति अपने नैतिक कर्तव्यों का निर्वहन करती आई है और आशा है आगे भी करती रहेगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकार और संपादक मंडल एवं प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

पुष्पेन्द्र

पुष्पेन्द्र गहलोत

सत्यमेव जयते

संपादकीय

सुगंधा पत्रिका का नवीन अंक आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। सुगंधा पत्रिका राजभाषा के प्रति अपने कर्तव्य को निभाते हुए निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। कर्मचारियों/अधिकारियों के विचारों को उदासीनता से हट कर एक नये आयाम से सोचने और उनके विचारों को एक सार्थक मंच प्रदान करने में सुगंधा पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

हम सबका यह संवैधानिक दायित्व है कि हिंदी के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य में सकारात्मक योगदान प्रदान करें। इस अंक में विभागीय गतिविधियाँ, कर्मचारियों की रचनाएँ, कविताएँ, आलेख प्रस्तुत किये जा रहे हैं। मुझे आशा है कि यह अंक आप सभी के लिए मनोरंजक, ज्ञानवर्धक एवं सहायक सिद्ध होगा। आपकी प्रतिक्रियाएं और सुझाव हमें और भी समृद्ध बनाएँगे।

आइये, हम सब मिलकर हिंदी को दैनिक कार्यों का प्रभावी माध्यम बनाएं और इसे देश की प्रगति से जोड़ें।

शुभकामनाओं सहित।

एकता
सहायक निदेशक (राजभाषा)

पाठकों के पत्र

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय), लखनऊ
तृतीय तल, ऑडिट भवन, टीसी–35–वी–1,
विभूति खंड, गोमती नगर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश - 226 010

Office of the Principal Director of Audit (Central), Lucknow
IIIrd Floor, Audit Bhawan, TC-35-V-1,
Vibhuti Khand, Gomti Nagar,
Lucknow, Uttar Pradesh - 226 010

पत्रांक सं.: प्र.म.नि.(के.)/प्रशासन/रा.भा.हि./फा.सं. 82047/2025-26/I/979235/2025
दिनांक: 20-05-2025

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय प्रधान महालेखाकर (लेखापरीक्षा), पंजाब,
चंडीगढ़-160017

विषय - हिन्दी अर्धवार्षिक पत्रिका "सुगंधा"' के 43वें अंक की ई-प्रति के सम्बन्ध में।

आदरणीय महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी अर्धवार्षिक पत्रिका "सुगंधा" के 43वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद | पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है |
पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर **"देश के विकास में ऑडिट का महत्व"**, **"नारी सशक्तिकरण"** एवं **"हिन्दी का सफर: एक अमर कहानी"** सारगर्भित एवं सराहनीय हैं| पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Rajesh Kumar Swyambhu
Date: 20-05-2025
10:53:33

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन

Phone: 0522-2970789, 2989000 Fax: 0522-2970780 Email: pdaclucknow@cag.gov.in

---

महालेखाकार (ले व ह) ,केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम -695001

OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM-695001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2025-26/ दिनांक08-05-2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ - 160017

महोदय/महोदया,

विषय : विभागीय हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका "सुगंधा" के 43वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।
संदर्भः आपके कार्यलय का ई-मेल दिनांक 01.05.2025

आपके कार्यालय की विभागीय हिंदी अर्धवार्षिक पत्रिका **'सुगंधा'** के 43वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्री आयुश अरोड़ा का लेख "ईमानदारी और सत्यनिष्ठा से राष्ट्र की समृद्धि" और "वेदांतः जीवन का सत्य और उद्देश्य", श्री सिकंदर कुमार का लेख " लोग आत्महत्या क्यों करते हैं ?", श्री राजीव सूद की कविता 'मुख्यालय अधिकारी और मदहोशी का आलम", श्री पायलेट मीना की कविता "सरकारी कर्मचारी की व्यथा ग्रामीण परिवेश में" एवं सुश्री मानसी दूबे की कविता "पिता" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका **'सुगंधा'** की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

Digitally signed by
Rohini K R
Date: 08-05-2025
10:50:08

सहायक निदेशक (राजभाषा)

ಮಹಾಲೇಖಪಾಲರು (ಲೆ. ಮತ್ತು ಹ.) ಕಛೇರಿ, ಕರ್ನಾಟಕ, ಬೆಂಗಳೂರು
ಭಾರತೀಯ ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ಲೆಕ್ಕಪತ್ರ ಇಲಾಖೆ
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सं. म.ले.(ले.व ह.)/हिं.क./2025-26/58 दिनांक :10.06.2025

सेवा में,

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चंडीगढ़

विषय: अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका **"सुगंधा"** के 43वें अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका **"सुगंधा"** के 43वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- सुश्री पारुल अरोड़ा का आलेख- **'नारी सशक्तिकरण'**, सुश्री अर्चिता का आलेख- **'आधुनिक जीवन शैली में आध्यात्म का महत्व'**, श्री अनूप पुनियाँ की कविता- **'हिन्दी का सफर: एक अमर कहानी'** श्री गौरव बग्गा की कविता- **'किस्सा एक कार्यालय का'** प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 11-06-2025
10:16:17
(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
पश्चिम बंगाल
ट्रेज़री बिल्डिंग्स, 2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
TREASURY BUILDINGS, 2, GOVT. PLACE (WEST),
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

सं. राजभाषा अनुभाग/हिंदी पत्रिका/पावती/57
दिनांक: 05.06.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा अनुभाग),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
पंजाब, चंडीगढ़ - 160017

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय का पत्रांक-हिं.अ./सुगंधा प्रेषण/2025-26/956808/2025 दिनांक 30.04.205 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "सुगंधा" की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। "सुगंधा" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से श्री अनूप पुनियाँ की रचना 'देश के विकास में ऑडिट का महत्व', सुश्री अर्चिता की रचना 'आधुनिक जीवन शैली में आध्यात्म का महत्व', श्री मुकेश कुमार की रचना 'एक प्रयास', श्री सिकंदर कुमार की रचना 'लोग आत्महत्या क्यों करते हैं?', इत्यादि सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उतरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय,

04/06/25

सहायक निदेशक (राजभाषा)

आलेख
व
कहानी

हिंदी के प्रयोग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन अनुवाद की भूमिका

अनूप पुनियाँ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भूमिका

हिंदी, भारत की राजभाषा और विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक, आधुनिक तकनीक के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रही है। जब दुनिया चौथी औद्योगिक क्रांति के दौर में प्रवेश कर चुकी है, तब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन अनुवाद जैसी तकनीकें वैश्विक संवाद और सूचना के आदान–प्रदान में अहम भूमिका निभा रही हैं। इन तकनीकों का उपयोग हिंदी के प्रचार–प्रसार, शिक्षा, प्रशासन, पत्रकारिता और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर तेजी से हो रहा है। AI और मशीन अनुवाद (Machine Translation & MT) तकनीकें भाषा के विकास और संचार को सहज और सुलभ बना रही हैं। हिंदी के परिप्रेक्ष्य में इनका प्रभाव गहन और व्यापक है। यह लेख हिंदी में AI और मशीन अनुवाद की भूमिका को ऐतिहासिक, तकनीकी, सामाजिक और भावी दृष्टिकोण से विस्तारपूर्वक प्रस्तुत करता है।

हिंदी भाषा का ऐतिहासिक तकनीकी विकास

स्वतंत्रता के बाद हिंदी भाषा का औपचारिक और तकनीकी विकास धीमी गति से आरंभ हुआ। प्रारंभिक दौर में हिंदी टाइपराइटर, रोटरी छपाई मशीनें और हस्तलिखित दस्तावेजों का बोलबाला था। जैसे–जैसे कंप्यूटर और सूचना तकनीक का आगमन हुआ, हिंदी भाषा ने डिजिटल रूप में प्रवेश किया। 1980 के दशक में कृतिदेव, चाणक्य और मंगल जैसे हिंदी फॉन्ट्स विकसित हुए, जिन्होंने हिंदी टंकण को सरल बनाया। यूनिकोड की शुरुआत के बाद हिंदी को वैश्विक डिजिटल मंचों पर पहचान मिली। अब इनस्क्रिप्ट और फोनेटिक की–बोर्ड ले–आउट के माध्यम से टाइपिंग और संवाद सरल हो गया है।

हिंदी के डिजिटलीकरण की प्रक्रिया ने न केवल प्रशासनिक कार्यों को सुगम बनाया, बल्कि आम जनता को भी उनकी भाषा में सरकारी सेवाओं तक पहुँचने का अधिकार प्रदान किया। यह परिवर्तन भारत सरकार के 'डिजिटल इंडिया' मिशन के तहत और भी तेजी से हुआ, जहाँ हिंदी में ई–गवर्नेंस, ई–लर्निंग और डिजिटल संवाद की सुविधा दी गई।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस: परिभाषा और कार्यप्रणाली

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वह तकनीक है जो मानव जैसी सोच, विश्लेषण और निर्णय लेने की क्षमता को मशीनों में स्थानांतरित करती है। हिंदी में AI की भूमिका को समझने के लिए जरूरी है कि हम इसके प्रमुख घटकों जैसे नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP), मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग और स्पीच रिकग्निशन को जानें। NLP के माध्यम से कंप्यूटर हिंदी भाषा को पढ़ और समझ सकता है, वहीं मशीन लर्निंग उसे स्वयं सीखने में सक्षम बनाती है।

उदाहरण के तौर पर, जब कोई उपयोगकर्ता हिंदी में वॉयस कमांड देता है, जैसे ''आज का मौसम क्या है?'' तो AI उस भाषा को पहचानकर उसका अर्थ समझता है और उत्तर देता है। यह प्रक्रिया हिंदी भाषा में संवाद को सहज बनाती है। आज भारत में विकसित कई एप्लीकेशन्स जैसे Google Assistant, Alexa और Siri हिंदी में बातचीत कर सकते हैं।

मशीन अनुवादः हिंदी को वैश्विक संवाद की भाषा बनाना

मशीन अनुवाद की प्रक्रिया में कंप्यूटर एक भाषा के वाक्यों को दूसरी भाषा में अनुवाद करता है। पहले यह नियम आधारित होती थी, लेकिन अब तंत्रिका मशीन अनुवाद (Neural Machine Translation & NMT) तकनीक से सटीक, संदर्भानुकूल और भावयुक्त अनुवाद संभव है। हिंदी भाषा में Google Translate, Microsoft Translator, और भारत सरकार की भाषिणी परियोजना प्रभावी रूप से कार्य कर रही हैं।

मशीन अनुवाद ने न्यायपालिका, शिक्षा, सरकारी योजनाओं और अंतरराष्ट्रीय पत्राचार में हिंदी की भागीदारी को सरल बनाया है। इससे न केवल अंग्रेजी बोलने वाले लोगों को हिंदी समझने में मदद मिली है, बल्कि ग्रामीण भारत में रहने वाले नागरिकों को भी वैश्विक जानकारी हिंदी में मिलने लगी है। AI आधारित अनुवाद उपकरण अब व्याकरण, भावार्थ और प्रासंगिकता को बेहतर तरीके से समझ पा रहे हैं।

डिजिटल मंचों पर हिंदी का बढ़ता प्रभुत्व

हिंदी अब केवल पारंपरिक माध्यमों तक सीमित नहीं रही। आज के डिजिटल युग में फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, ट्विटर जैसे मंचों पर हिंदी में सामग्री का निर्माण और उपभोग तेजी से बढ़ रहा है। Google Trend के अनुसार, भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं में से लगभग 70% लोग क्षेत्रीय भाषाओं में खोज करते हैं, जिनमें हिंदी शीर्ष पर है।

AI आधारित सुझाव प्रणाली हिंदी उपयोगकर्ताओं को उनके अनुसार कंटेंट सुझाती है, जिससे वीडियो, लेख और समाचारों की पहुंच में वृद्धि होती है। हिंदी ब्लॉगिंग, पॉडकास्टिंग और डिजिटल पत्रकारिता के लिए भी AI आधारित टूल्स जैसे Grammarly, Jasper AI और Quillbot अब हिंदी में भी उपलब्ध हो रहे हैं। इससे हिंदी कंटेंट की गुणवत्ता और रचना में सुधार हुआ है।

हिंदी शिक्षा और अनुसंधान में AI की भूमिका

AI तकनीक ने शिक्षा प्रणाली में व्यक्तिगत, समायोज्य और तकनीकी रूप से समर्थ शिक्षण का मार्ग प्रशस्त किया है। हिंदी माध्यम के छात्रों के लिए अब कई ऑनलाइन पाठ्यक्रम, इंटरैक्टिव ऐप्स और डिजिटल ट्यूटर उपलब्ध हैं। Duolingo जैसे एप हिंदी भाषा सिखाने में सहायक हैं, वहीं Google Bolo बच्चों को पढ़ने की आदत डालता है।

शोधकर्ताओं के लिए हिंदी में कॉर्पस, शब्दकोश, व्याकरण संरचना डेटाबेस, और सेंटिमेंट एनालिसिस टूल्स जैसी सुविधाएं विकसित हो रही हैं। इससे हिंदी में शोध कार्य को नई दिशा और प्रामाणिकता प्राप्त हो रही है। भारतीय भाषाओं में काम कर रहे शिक्षाविद अब AI के माध्यम से हिंदी भाषा को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समृद्ध बना रहे हैं।

प्रशासन और न्यायिक प्रणाली में हिंदी का तकनीकी समावेश

ई–गवर्नेंस प्लेटफॉर्म्स जैसे UMANG, DigiLocker और BHIM ऐप अब हिंदी में उपलब्ध हैं। इससे हिंदी भाषी नागरिकों को डिजिटल सेवाओं की आसान पहुंच मिलती है। न्यायिक प्रणाली में भी सुप्रीम कोर्ट और उच्च न्यायालयों में निर्णयों का हिंदी अनुवाद किया जा रहा है।

AI आधारित ट्रांसक्रिप्शन सिस्टम न्यायालय में बोले गए शब्दों को तुरंत हिंदी में लिखने और रिकॉर्ड करने में सहायता करते हैं। इससे कानूनी प्रक्रिया में पारदर्शिता और प्रभावशीलता बढ़ी है। हिंदी में केस लॉ, कानून, अधिसूचनाएं और विधिक दस्तावेजों का अनुवाद भी अब AI की सहायता से संभव हो गया है।

वैश्विक मंच पर हिंदी की भूमिका और संभावनाएं

आज के समय में हिंदी भाषा की उपस्थिति केवल भारत तक सीमित नहीं रही है। विश्व के अनेक भागों में, विशेषकर जहां प्रवासी भारतीय रहते हैं, हिंदी का उपयोग व्यापक रूप से हो रहा है। संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर हिंदी में दस्तावेजों और घोषणाओं का अनुवाद हो रहा है। इसके अतिरिक्त, विश्व बैंक, यूनिसेफ और अन्य अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों ने भी हिंदी में संवाद और रिपोर्टिंग की शुरुआत की है।

AI और मशीन ट्रांसलेशन तकनीकों की सहायता से अब विदेशों में रहने वाले प्रवासी भारतीय हिंदी में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और अपने देश के साथ संपर्क बनाए रख सकते हैं। यह सांस्कृतिक जुड़ाव को सशक्त करता है। साथ ही, विदेशी नागरिक भी अब हिंदी भाषा को सीखने और समझने में रुचि ले रहे हैं क्योंकि डिजिटल अनुवाद और संवाद के उपकरण इस भाषा को उनके लिए सुलभ बना रहे हैं।

चुनौतियाँ और नीतिगत सुझाव

हालाँकि हिंदी में AI और अनुवाद तकनीकों का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है, परंतु इस दिशा में कई चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। सबसे प्रमुख चुनौती है–प्रमाणिक, विविध और टैग किए गए हिंदी डाटा की उपलब्धता। AI मॉडल को प्रशिक्षित करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले डाटा की आवश्यकता होती है जो विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों, सामाजिक संदर्भों और भाषिक रूपों को कवर करता हो।

इसके अतिरिक्त, तकनीकी शब्दावली की असंगति, प्रशिक्षण प्राप्त मानव संसाधनों की कमी, और तकनीकी उपकरणों की सीमित पहुंच भी बाधा उत्पन्न करते हैं। इन चुनौतियों के समाधान हेतु:

- सरकार को हिंदी भाषा में ओपन सोर्स AI टूल्स और संसाधनों को बढ़ावा देना चाहिए।
- निजी और सार्वजनिक संस्थानों के बीच सहयोग के माध्यम से डाटा निर्माण, मॉडल प्रशिक्षण और तकनीकी नवाचार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- AI पाठ्यक्रमों में हिंदी भाषा का समावेश करना चाहिए ताकि क्षेत्रीय छात्रों को भी आधुनिक तकनीकी शिक्षा मिल सके।
- नीति निर्माताओं को एक समर्पित 'हिंदी डिजिटल विकास योजना' बनानी चाहिए जो AI, डाटा और अनुवाद तकनीकों में हिंदी को प्राथमिकता दे।

ग्रामीण भारत में हिंदी आधारित AI का प्रभाव

भारत की 65% से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, जहाँ अंग्रेजी का ज्ञान सीमित होता है। इन क्षेत्रों में हिंदी आधारित AI तकनीकें क्रांति ला रही हैं। कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा और वित्तीय समावेशन जैसे क्षेत्रों में हिंदी में AI आधारित समाधान ग्रामीण जनों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

उदाहरण के लिए, AI आधारित वॉयस असिस्टेंट ग्रामीण किसानों को उनकी भाषा में मौसम की जानकारी, कृषि सलाह और फसल मूल्य जैसे डाटा उपलब्ध करवा रहे हैं। इसी तरह टेलीमेडिसिन सेवाओं के माध्यम से हिंदी में संवाद करके डॉक्टर और मरीज के बीच दूरी को समाप्त किया जा रहा है। हिंदी में फाइनेंशियल लिटरेसी ऐप्स बैंकिंग सेवाओं को भी गांव–गांव तक पहुंचा रहे हैं।

हिंदी कॉर्पोरा और डाटा संसाधनों का निर्माण

AI तकनीक की सफलता उस डाटा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है जिस पर वह प्रशिक्षित होती है। हिंदी भाषा के लिए कॉर्पोरा, टोकनाइज्ड वाक्य संरचना, लेबलिंग, भाषिक संसाधनों का निर्माण अब एक

अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है। IIT मद्रास, IIT हैदराबाद और C&DAC जैसे संस्थान इस दिशा में कार्य कर रहे हैं।

AI4Bharat जैसे ओपन सोर्स प्रोजेक्ट्स हिंदी में टेक्स्ट, स्पीच और संवाद के बड़े डाटासेट मुफ्त में शोधकर्ताओं को उपलब्ध करा रहे हैं। इनके माध्यम से शिक्षण, भाषण मान्यता, अनुवाद और डेटा जनरेशन जैसे क्षेत्रों में हिंदी भाषा को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया जा रहा है।

हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार में AI का उपयोग

डिजिटल मीडिया में AI का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। समाचार लेखन में ऑटो जनरेशन, हेडलाइन सजेशन, और ट्रेंड एनालिसिस जैसे फीचर अब हिंदी समाचार वेबसाइट्स और ऐप्स में अपनाए जा रहे हैं। दैनिक जागरण, नवभारत टाइम्स, और आज तक जैसे मीडिया हाउस AI तकनीकों का प्रयोग कर हिंदी खबरों को तेज, सटीक और समकालीन बना रहे हैं।

सोशल मीडिया निगरानी के लिए AI आधारित टूल्स हिंदी भाषा में वायरल खबरों की पहचान, फेक न्यूज की जाँच, और जनसंचार की धारणा विश्लेषण में उपयोग हो रहे हैं। इससे मीडिया की निष्पक्षता और विश्वसनीयता में वृद्धि हुई है।

हिंदी साहित्य और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण

AI तकनीक केवल वर्तमान संवाद की भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने का माध्यम भी बन रही है। हिंदी साहित्य, पुराने ग्रंथ, कविताएँ, कहानियाँ और ऐतिहासिक दस्तावेज जो अब तक केवल पुस्तकालयों या संग्रहालयों तक सीमित थे, उन्हें AI आधारित OCR तकनीकों के माध्यम से डिजिटल रूप में लाया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त, AI का उपयोग हिंदी साहित्य का अंग्रेजी और अन्य भाषाओं में अनुवाद करने में भी किया जा रहा है, जिससे भारत की सांस्कृतिक छवि वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत की जा सके।

हिंदी में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और संवाद का विकास

AI का एक अगला चरण है 'इमोशनल इंटेलिजेंस' जहाँ मशीनें उपयोगकर्ता की भावनाओं को समझ कर संवाद करती हैं। हिंदी में यह तकनीक अभी नवाचार के चरण में है, लेकिन इसका व्यापक भविष्य है। चैट–बोट्स और हेल्पलाइन सेवाओं में जब कोई उपयोगकर्ता दुख, चिंता या उत्तेजना की स्थिति में होता है, तब AI आधारित सिस्टम उसके भाव समझ कर उचित उत्तर देता है।

शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, ग्राहक सेवा और परामर्श सेवाओं में हिंदी में संवेदनशील AI आधारित इंटरफेस का निर्माण इस दिशा में नई संभावनाएँ खोल रहा है।

भविष्य की राह हिंदी और AI का समन्वय

भविष्य में जब तकनीक और मानवता का समन्वय और गहरा होगा, तब हिंदी जैसी भाषाओं का महत्व और भी बढ़ जाएगा। भारत सरकार और तकनीकी संस्थानों को मिलकर एक ऐसी प्रणाली बनानी होगी जो हिंदी भाषा को सभी डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सर्वसुलभ बनाए। हिंदी में जनरेटिव AI मॉडल, संवेदनशील संवाद तंत्र, स्वदेशी चैट–बोट्स और हिंदी आधारित रोबोटिक्स जैसी तकनीकों का निर्माण आने वाले समय में प्राथमिकता होनी चाहिए।

एक मजबूत डिजिटल हिंदी इकोसिस्टम भारत की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक एकता को बल

देगा। इससे न केवल डिजिटल समावेशन बढ़ेगा बल्कि भारत की वैश्विक छवि एक भाषाई रूप से समृद्ध और तकनीकी रूप से सक्षम राष्ट्र के रूप में उभरेगी।

हिंदी में नवाचार और स्टार्टअप्स का योगदान

भारत में तकनीकी स्टार्टअप संस्कृति ने पिछले एक दशक में जबरदस्त उछाल देखा है। विशेष रूप से भाषाई तकनीक के क्षेत्र में कई नवाचार सामने आए हैं जो हिंदी जैसी भाषाओं के लिए समर्पित हैं। उदाहरण के तौर पर Reverie Language Technologies, Karya और Indic AI जैसे स्टार्टअप हिंदी भाषा में वॉयस–आधारित सेवाएं, अनुवाद इंजन और संवादात्मक प्लेटफॉर्म बना रहे हैं।

ये स्टार्टअप न केवल स्थानीय भाषाओं के लिए समाधान ला रहे हैं, बल्कि रोजगार, नवाचार और डिजिटल लोकतंत्र की दिशा में भी योगदान दे रहे हैं। भारत सरकार की स्टार्टअप इंडिया योजना और Digital India कार्यक्रम के तहत इन संस्थानों को सहयोग भी मिल रहा है। यदि हिंदी में केंद्रित इनोवेशन को सरकारी नीति और निवेश के माध्यम से बढ़ावा दिया जाए, तो भारत दुनिया के सबसे बड़े बहुभाषी AI इकोसिस्टम का नेतृत्व कर सकता है।

हिंदी मीडिया और मनोरंजन में AI की भूमिका

मनोरंजन उद्योग में भी AI ने हिंदी भाषा के माध्यम से कई नई संभावनाएँ खोली हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म जैसे Netflix, Amazon Prime, और Disney+ Hotstar अब हिंदी में डबिंग, उपशीर्षक, और भाषा चयन की सुविधा प्रदान कर रहे हैं। AI आधारित डबिंग टूल्स अब स्वचालित रूप से संवाद की लिपि पहचान कर उच्च गुणवत्ता वाला हिंदी अनुवाद तैयार करते हैं।

इसके अलावा, व्यक्तिगत अनुशंसा प्रणाली (Recommendation System) हिंदी उपयोगकर्ताओं को उनकी पसंद के अनुसार सामग्री सुझाती है, जिससे उपयोगकर्ता अनुभव समृद्ध होता है। YouTube, Spotify और अन्य वीडियो/ऑडियो सेवाओं में AI हिंदी सामग्री की खोज, विश्लेषण और वितरण को सहज बनाता है। यह हिंदी भाषी रचनाकारों को अधिक व्यापक दर्शकवर्ग तक पहुँचाने में सहायक हो रहा है।

हिंदी में डिजिटल समावेशन और सामाजिक प्रभाव

हिंदी भाषा में AI आधारित सेवाओं की उपलब्धता ने भारत के समाज में समावेशन की नई लहर शुरू की है। विशेषकर महिलाएं, वरिष्ठ नागरिक, और दिव्यांगजन अब अपनी मातृभाषा में डिजिटल तकनीकों का लाभ उठा पा रहे हैं। उदाहरणतः, नेत्रहीनों के लिए टेक्स्ट–टू–स्पीच और वॉयस असिस्टेंट सेवाएं हिंदी में उपलब्ध हैं जो उन्हें शिक्षा, सूचना और संवाद का अवसर देती हैं।

ग्रामीण महिलाओं के लिए AI आधारित कृषि और स्वास्थ्य ऐप्स अब हिंदी में जानकारी देकर उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार ला रहे हैं। डिजिटल समावेशन के लिए भाषा आधारित बाधाएं अब कम होती जा रही हैं। इससे न केवल सूचना का अधिकार मजबूत हुआ है, बल्कि लोकतांत्रिक सहभागिता भी सशक्त हो रही है।

हिंदी और बहुभाषिक भारत में AI का संतुलन

भारत की भाषाई विविधता उसकी सांस्कृतिक संपत्ति है। हिंदी देश की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, परंतु इसके साथ–साथ बंगाली, तमिल, मराठी, तेलुगु जैसी अनेक भाषाएँ भी महत्वपूर्ण हैं। AI तकनीक को इन सभी भाषाओं में सुलभ बनाना एक साझा लक्ष्य है। हिंदी इस दिशा में 'लिंकेज लैंग्वेज' के रूप

में कार्य कर सकती है।

यदि AI मॉडल पहले हिंदी में प्रशिक्षित किए जाएं और फिर अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद और समायोजन के लिए उपयोग में लाए जाएं, तो एक समावेशी AI फ्रेमवर्क संभव है। इस हेतु, नीति–निर्माताओं को हिंदी को तकनीकी संसाधनों के केन्द्रीय केंद्र के रूप में स्थापित करना चाहिए ताकि बहुभाषिक संतुलन बना रहे और भाषाओं के बीच कोई वर्चस्व की भावना न हो।

हिंदी भाषा नीति और वैश्विक रणनीति

भविष्य की भाषा नीति में हिंदी को तकनीकी प्राथमिकता देना आवश्यक है। इसके लिए सरकार को निम्नलिखित रणनीतिक कदम उठाने चाहिए:

- हिंदी आधारित भाषा संसाधनों को राष्ट्रीय संपदा घोषित करना।
- भाषा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी में अनुसंधान हेतु राष्ट्रीय भाषा AI फंड की स्थापना।
- हिंदी माध्यम से तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देना, जिससे ग्रामीण और अर्धशहरी क्षेत्रों में AI साक्षरता बढ़े।
- अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी में डिजिटल कूटनीति और सांस्कृतिक कूटनीति को आगे बढ़ाना।

निष्कर्ष: हिंदी और AI की साझेदारी का भविष्य

AI और हिंदी भाषा के बीच उभरती हुई साझेदारी भारत के डिजिटल भविष्य को नया आकार दे रही है। यह न केवल तकनीकी विकास का प्रतीक है, बल्कि यह भाषाई समानता, सांस्कृतिक संरक्षण और सामाजिक सशक्तिकरण का भी वाहक है। आने वाले वर्षों में हिंदी आधारित AI समाधान शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रशासन, मनोरंजन, और व्यापार के हर क्षेत्र को प्रभावित करेंगे।

यह भी स्पष्ट है कि हिंदी में AI और मशीन अनुवाद की क्षमता को प्रोत्साहित करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण आवश्यक है। सरकार, निजी क्षेत्र, शैक्षणिक संस्थान और नागरिक समाज को मिलकर एक समेकित रणनीति बनानी होगी जो न केवल तकनीकी उन्नयन को सुनिश्चित करे, बल्कि भाषा की गरिमा और उपयोगिता को भी बनाए रखे। इसके लिए, हिंदी में उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को समझने वाले UX डिजाइन, सटीक और भरोसेमंद अनुवाद मॉडल, क्षेत्रीय विविधताओं का सम्मान करने वाले संवाद सिस्टम, और समावेशी नीतियां बनानी होंगी।

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, वह विचार, संस्कृति और आत्मा की अभिव्यक्ति होती है। यदि हम हिंदी को तकनीकी रूप से सक्षम बना पाए, तो यह न केवल एक डिजिटल भाषा बनेगी, बल्कि यह भावनात्मक जुड़ाव, सामाजिक न्याय और राष्ट्रीय गर्व की संवाहक भी होगी। आने वाले समय में जब दुनिया बहुभाषिक AI की ओर बढ़ेगी, तब हिंदी जैसी भाषाओं की भूमिका और भी अधिक महत्वपूर्ण होगी। हिंदी भाषा को तकनीक के साथ जोड़कर हम उसे भविष्य की भाषा बना सकते हैं—एक ऐसी भाषा जो न केवल बोलचाल की होगी, बल्कि डिजिटल नेतृत्व की ध्वजवाहक भी होगी।

इस परिप्रेक्ष्य में, यह आवश्यक है कि हिंदी को तकनीकी प्रयोगों और नवाचारों के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में देखा जाए। इससे भाषा के विकास के साथ–साथ नई तकनीकी संभावनाएं भी उभरेंगी। उदाहरण के लिए, हिंदी में भावनात्मक विश्लेषण (sentiment analysis), स्वचालित संक्षेपण (text summarization), ऑडियो–स्पीच इंटरफेस और रोबोटिक्स के क्षेत्र में संवादात्मक मॉडल्स का निर्माण—ये सभी कदम हिंदी को वैश्विक AI इकोसिस्टम का भाग बनाएंगे।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की स्थिति को मजबूत करने के लिए आवश्यक है कि हम अंतरराष्ट्रीय AI सम्मेलन, भाषायी प्रौद्योगिकी प्रदर्शनियों और सांस्कृतिक आदान–प्रदान कार्यक्रमों में हिंदी के लिए विशेष स्थान सुनिश्चित करें। विदेशी विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों के साथ सहयोग कर हिंदी भाषा आधारित प्रौद्योगिकी नवाचार को वैश्विक मान्यता दिलाई जा सकती है।

इसके साथ ही, डिजिटल न्याय की अवधारणा को मजबूत करने के लिए यह जरूरी है कि हिंदी बोलने वाले नागरिकों को तकनीकी सेवाओं का उपयोग उनकी भाषा में सहजता से मिले। इससे न केवल सामाजिक और आर्थिक बाधाएं कम होंगी, बल्कि समावेशिता को भी बढ़ावा मिलेगा। एक ऐसा भारत जहाँ तकनीक और भाषा साथ चले, वही सही मायनों में समावेशी और प्रगतिशील भारत होगा।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि हिंदी और AI की साझेदारी न केवल तकनीक के क्षेत्र में क्रांति लाएगी, बल्कि यह भारत की आत्मा को भी नई पहचान देगी। यह साझेदारी हमारे सपनों के 'नवभारत' की नींव रखेगी–जहाँ हर नागरिक अपनी भाषा में सशक्त हो, हर विचार डिजिटल रूप से जीवंत हो, और हर नवाचार में हिंदी का आत्मस्वर गूंजे।

खुशी

तुषार कांती सिन्हा
वरिष्ठ
लेखापरीक्षक

नरेश के जीवन में खुशी कई बार आई और चली गई,उसे पता ही नहीं चला खुशी कब आई और कब चली गई असल में उसे जिस खुशी की तलाश थी वो आ ही नहीं रही थी। नरेश का एक पड़ोसी उसे बहुत परेशान करता था। पड़ोसी की हरकत से नरेश बहुत उदास रहता था। एक दिन उसके पड़ोसी की मौत सड़क हादसे में हो गई । मोहल्ले के सारे लोग गम में डूब गए उसके परिवार पर तो गमों का पहाड़ टूट पड़ा, पर उसी मोहल्ले के नरेश के लिए यह घटना खुशी का एक ढेर था, उसका मन खुशी से उछल रहा था। यह एक ऐसा वक्त था जब सारे लोग जहाँ गम मना रहे थे वहाँ एक व्यक्ति खुशी मना रहा था। यह वक्त किसी के लिए गम लेकर आया था तो किसी के लिए खुशी तो खुशी एक अनुभव है जो व्यक्ति विशेष के लिए एक ही कथानक के लिए अलग–अलग होता है। दिवाली का दिन है, कुम्हार का एक बेटा मिट्टी के खिलौने बेचने बाजार आया हुआ है,आधा दिन निकल गया एक भी ग्राहक नहीं आया। अमीर के छोटे–छोटे बच्चे बगल की दुकान से खिलौने ले कर जा रहे थे पर उसकी दुकान में एक भी ग्राहक नहीं आया। अब उम्मीद पस्त हो चली थी। सहसा एक ग्राहक अपने बच्चे के साथ उसके दुकान में आया और उसके सारे खिलौने खरीद लिए। कुम्हार के बच्चे की खुशी की ठिकाना नहीं रहा। वह खुशी से झूम रहा था कि आज वो उन पैसों से पटाखे खरीद लेगा और इस बार की दिवाली में जब सारे लोग पटाखे छोड़ेंगे तब वह भी अपने घर पर पटाखे छोड़ेगा। उधर उस अमीर के बच्चे इसलिए खुश थे कि उन्हें आज ढेर सारे खिलौने मिल गए। यहाँ एक बच्चा खिलौने बेच कर खुश था तो दूसरा बच्चा खिलौने खरीद कर।

खुशी के यह दो रूप है जो विष्यान्तर पर भिन्न है पर दोनों ही रूप में खुशी है। खुशी हृदय को उद्वेलित कर देती है यह मानव के तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करती है। एक सिपाही बहुत दिनों से सीमा से गुम हो गया था। शायद दुश्मन ने उसे अपने कब्जे में ले लिया था। उसे लोग शहीद समझ कर संताप कर रहे थे। अचानक एक दिन सिपाही अपने घर आ जाता है। उसे देख उसकी पत्नी, उसकी माँ और उसके बच्चे उससे लिपट जाते है यहाँ खुशियाँ समूह में आती है पर सारी खुशियों का आयाम अलग–अलग था। खुशी से पत्नी माँ और बच्चों की अश्रु ग्रंथि जागृत हो जाती है। माँ खुशी से रो पड़ती है वो आँख के आँसू को रोक नहीं पाती है, अविरल धार उसके नेत्रों से बह जाती है। पत्नी को भी अपार खुशी मिलती है, खुशी के आँसू से आँखें डबडबा जाती है, पर वो रोती नहीं है। अपनी आँखें बन्द कर लेती है। सोचती है, खुशी मिली इतनी की मन में न समाये, पलक बन्द कर लूँ, कहीं ढलक ही न जाये। बच्चों को अपने बाप की कमी बहुत खलती थी, अपने पिता को याद कर वे दिन रात रो–रो बिताते थे पर ये क्या, आज उनकी आँखों के आँसू कहाँ गये, आँखों में समा गये या गम के आँसू को खुशी पी गई। खुशी बच्चों के आँखों में मोती बन चमकने लगी। वाह रे खुशी ! तेरे कितने रूप। खुशी कभी उन्माद लाती है तो कभी धैर्य और सहनशीलता। रामकलेश और महेश दोनों एक ही कंपनी में कार्यरत है, कंपनी की ओर से दोनों को पाँच–पाँच लाख मिलता है। रामकलेश कार खरीद लेता है जबकि महेश उन पैसों से बेटे का दाखिला इंजीनियरिंग कॉलेज में करा देता है।

खुशी दोनों को मिली एक खुश है कि उसका बेटा अब कार में सैर करेगा, दूसरा खुश है कि उसका बेटा जब इंजीनियर बन जायेगा तो ऐसी दो कार खरीद लेगा। अब यहाँ खुशी ईर्ष्या पैदा करती है, एक की खुशी दूसरे को खलती है। रामकलेश की कार को देख महेश की पत्नी जलती है तो महेश के बेटे को कॉलेज जाते देख, रामकलेश की पत्नी का कलेजा कटता है। खुशी क्या आई, बला आ गई। दोनों पड़ोसियों की खुशी ईर्ष्या की दीवार बन खड़ी हो गई। कभी खुशी अभिमानी हो जाती है तो कभी बेमानी। खुशी मिलते ही अभिमान अपने आप आ जाता है। रामधनी जब सरपंच बन गए तो कस्बे के लोगों मे खुशी की लाहर छा गयी, ढोल नगाड़े पर लोग नाचने लगे। सरपंच बनने पर वे अपने लोगों पर ही जुल्म करने लगे, लोगों को चंदा देने के लिए प्रताड़ित

करने लगे। खुशी आई मगर सरपंच का अभिमान बन कर तो गाँव वाले का अभिशाप बन कर। एक तो खुशी जल्दी आती नहीं, आती है तो टिकती नहीं, टिक जाती है तो हर्ष, नहीं टिकी तो विषाद। कोई दूसरे की खुशी के लिए अपनी खुशी खो देता है तो कोई अपनी खुशी के लिए दूसरों की खुशी हर लेता है। कोई किसी के साथ रह कर खुश रहता है तो कोई किसी के बगैर खुश रहना पसंद करता है। कोई अपनी खुशी बाँटता है तो कोई अपनी खुशी के लिये दूसरे की खुशी छीन लेता है। खुशी के लिये हिंसा और कलह होती है। अपने बेटे की नौकरी लगने पर बाप इसलिए खुश है कि आज वो बहुत बड़ी जिम्मेदारी से मुक्त हो गया। बेटा इसलिए खुश है कि उसे मनचाही नौकरी मिल गई। बाप के लिए खुशी एक बारात है तो बेटे के लिए खुशी एक सौगात।

एक प्रेमी खुश है की उसकी आज सगाई है पर मन में कसक है कि सगाई किसी और से हो रही है, माँ बाप के विरोध के कारण सगाई उसके प्रेमिका से न हो पाई। एक प्रेमिका इसलिए खुश है कि उसकी सगाई उसी से हो रही है जिससे वो प्रेम करती थी। यहाँ एक की खुशी, खुशी की एक बिंदु मात्र है और दूसरे कि खुशी, खुशी की परिधि। खुशी किसी को पागल कर देता है तो किसी को दीवाना। किसी के नसीब में खुशी मिलती नहीं तो किसी से खुशी सम्भाले नहीं संभलती। खुशी भोगने के लिए शक्ति होनी चाहिए तो खुशी पचाने के लिए धैर्य। खुशी छुपाये नहीं छुपती, हर हाल में प्रकट हो जाती है।

''खुशी की खोज में किसी ने जीवन खसारा कर लिया,
पा कर खुशी किसी ने जीवन दुबारा कर लिया।''

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI): मानवता के भविष्य की क्रांति

आयुष अरोड़ा
लेखापरीक्षक

AI की परिभाषा और विकास

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आज के युग का सबसे क्रांतिकारी और दूरदर्शी आविष्कार है। यह केवल तकनीकी प्रगति का प्रतीक नहीं है, बल्कि मानवता की सोच, समझ और जीवन जीने के तरीके को फिर से परिभाषित करने की क्षमता रखती है। यह एक ऐसी तकनीक है, जो मशीनों को मानव मस्तिष्क की नकल करने की शक्ति देती है जिससे वे समस्याओं का समाधान कर सकें, विचार कर सकें, और निर्णय ले सकें। 1950 में, एलन ट्यूरिंग ने अपने प्रसिद्ध 'ट्यूरिंग टेस्ट' के साथ इस प्रश्न का उत्तर ढूंढने की कोशिश की, कि क्या मशीनें इंसानों की तरह सोच सकती हैं। इस विचार से AI की नींव रखी गइ और तब से लेकर अब तक इसमें असाधारण प्रगति हुई है। आज, AI मशीन लर्निंग, डीप लर्निंग और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण जैसी तकनीकों का उपयोग कर दुनिया भर में असीमित अवसर पैदा कर रहा है।

"सीखने की क्षमता एक मशीन के पास सबसे महत्वपूर्ण गुणवत्ता है।" –एलोन मस्क

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रकार

AI को व्यापक रूप से तीन श्रेणियों में बांटा गया है:

1. संकुचित AI (Narrow AI): यह AI का सबसे सामान्य और वर्तमान में सबसे अधिक प्रचलित रूप है, जिसमें एक मशीन केवल एक विशिष्ट कार्य में माहिर होती है। उदाहरणस्वरूप गूगल सर्च इंजन, सिरी और एलेक्सा जैसे वॉयस असिस्टेंट्स, और फेस रिकग्निशन सिस्टम।

2. सामान्य AI (General AI): यह AI भविष्य की उस अवस्था को दर्शाता है, जब मशीनें मानव मस्तिष्क के बराबर या उससे भी अधिक बुद्धिमान होंगी और किसी भी कार्य को स्वतंत्र रूप से कर सकेंगी, चाहे वह कितना भी जटिल क्यों न हो। यह अभी तक पूरी तरह से विकसित नहीं हुआ है, परन्तु इस पर शोध जारी है।

3. सुपरइंटेलिजेंस (Superintelligence): यह AI का वह रूप है, जो मानव बुद्धिमत्ता से परे जाकर स्व–सीखने, नवाचार और अपने निर्णयों को सुधारने की क्षमता रखेगा। यह AI का एक काल्पनिक लेकिन अत्यंत शक्तिशाली रूप है, जिसे भविष्य में मानवता के लिए अत्यधिक लाभकारी या खतरे के रूप में देखा जा सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग और प्रभाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज दुनिया के हर कोने में अपनी छाप छोड़ रही है। इसका उपयोग व्यापार, चिकित्सा, शिक्षा, पर्यावरण संरक्षण, और सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में व्यापक रूप से किया जा रहा है। यहां AI के कुछ मुख्य उपयोग और इसके प्रभाव पर एक दृष्टि डालते है:

1. स्वास्थ्य सेवाएँ: AI ने चिकित्सा जगत में क्रांति ला दी है। AI संचालित उपकरणों और एल्गोरिदम का उपयोग करके बीमारियों का प्रारंभिक चरण में निदान, जीनोमिक्स, और व्यक्तिगत उपचार की योजना बनाई जा रही है। रोबोटिक सर्जरी और AI आधारित डायग्नोस्टिक टूल्स चिकित्सा प्रक्रियाओं को अधिक सटीक और

प्रभावी बना रहे हैं।

2. शिक्षा: शिक्षा क्षेत्र में AI का प्रभाव अत्यधिक महत्वपूर्ण है। AI का उपयोग व्यक्तिगत शिक्षा, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, और आभासी शिक्षक के रूप में हो रहा है, जो प्रत्येक छात्र की जरूरतों और क्षमताओं के अनुसार अनुकूलित होते हैं। AI न केवल शिक्षकों के कार्य को सरल बना रहा है, बल्कि छात्रों को उनकी गति और रुचियों के अनुसार सीखने में मदद कर रहा है।

3. व्यापार और उद्योग: व्यापार में AI ने आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, ग्राहक सेवा, वित्तीय पूर्वानुमान, और डेटा विश्लेषण में सुधार किया है। AI से सशक्त स्वचालन ने उत्पादकता में वृद्धि की है और उद्यमों को नई संभावनाएँ प्रदान की हैं। इसके अलावा, AI मार्केटिंग और विज्ञापन के क्षेत्र में उपभोक्ता व्यवहार का विश्लेषण करके व्यापारिक रणनीतियों को अधिक प्रभावी बना रहा है।

4. पर्यावरण संरक्षण: AI का उपयोग जलवायु परिवर्तन की भविष्यवाणी, प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन, और जैव विविधता के संरक्षण में किया जा रहा है। AI आधारित तकनीकों से जलवायु मॉडलिंग और प्रदूषण नियंत्रण जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर काम किया जा रहा है।

5. रोबोटिक्स और स्वचालन: AI के माध्यम से स्वचालित वाहनों, ड्रोन, और स्मार्ट रोबोट्स का विकास किया जा रहा है, जो जटिल कार्यों को अधिक कुशलता से पूरा कर सकते हैं। इन स्वचालित प्रणालियों से भविष्य में परिवहन, निर्माण और कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलेंगे।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभ और चुनौतियाँ

AI के अनेक लाभ हैं, लेकिन इसके साथ कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी जुड़ी हैं:

1. **लाभ:**

* AI से कई मानव कार्यों का स्वचालन हुआ है, जिससे समय और संसाधनों की बचत होती है।
* जटिल समस्याओं के हल के लिए AI अत्यधिक उपयोगी साबित हुआ है, विशेषकर चिकित्सा अनुसंधान, जलवायु परिवर्तन, और अंतरिक्ष अन्वेषण में।
* AI व्यक्तिगत और वैश्विक स्तर पर समस्याओं के समाधानों को तेज और सटीक बनाने में सक्षम है।

2. **चुनौतियाँ:**

* रोजगार का संकट: AI के आगमन से स्वचालन बढ़ा है, जिससे पारंपरिक नौकरियों पर संकट पैदा हो रहा है। बड़ी संख्या में नौकरियाँ स्वचालित प्रणालियों द्वारा ली जा रही हैं, जिससे बेरोजगारी की संभावना बढ़ रही है।
* नैतिक और गोपनीयता के मुद्दे: AI से संबंधित नैतिक प्रश्न भी उठ रहे हैं, जैसे मशीनों को कितनी स्वायत्तता दी जानी चाहिए? इसके अलावा, AI का उपयोग डेटा संग्रह और निगरानी के लिए किया जा सकता है, जिससे गोपनीयता की गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं।
* AI का दुरुपयोग: यदि AI का गलत हाथों में उपयोग किया जाता है, तो यह अत्यधिक हानिकारक साबित हो सकता है। उदाहरण के लिए, AI का उपयोग साइबर हमले, स्वचालित हथियारों और अन्य हानिकारक गतिविधियों के लिए किया जा सकता है।

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानवता के लिए असीम संभावनाएँ लेकर आई है। यह न केवल हमारी वर्तमान समस्याओं का समाधान कर रही है, बल्कि भविष्य की जटिल चुनौतियों से निपटने के नए तरीके भी पेश कर

रही है। हालांकि AI के साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ और नैतिक प्रश्न भी जुड़े हैं, लेकिन सही दिशा में इसका उपयोग हमें एक उज्ज्वल और सुरक्षित भविष्य की ओर ले जा सकता है। AI को समझदारी, संवेदनशीलता, और जिम्मेदारी के साथ विकसित किया जाए तो यह मानव जाति के इतिहास में एक अद्वितीय युग की शुरुआत करेगा, जहाँ तकनीक और मानवता साथ–साथ विकास करेगा।

"जितना बदलाव हमने पिछले 50 वर्षों में देखा है,

उससे अधिक बदलाव हम अगले 5 वर्षों में देखने जा रहे हैं।"

–जैक मा

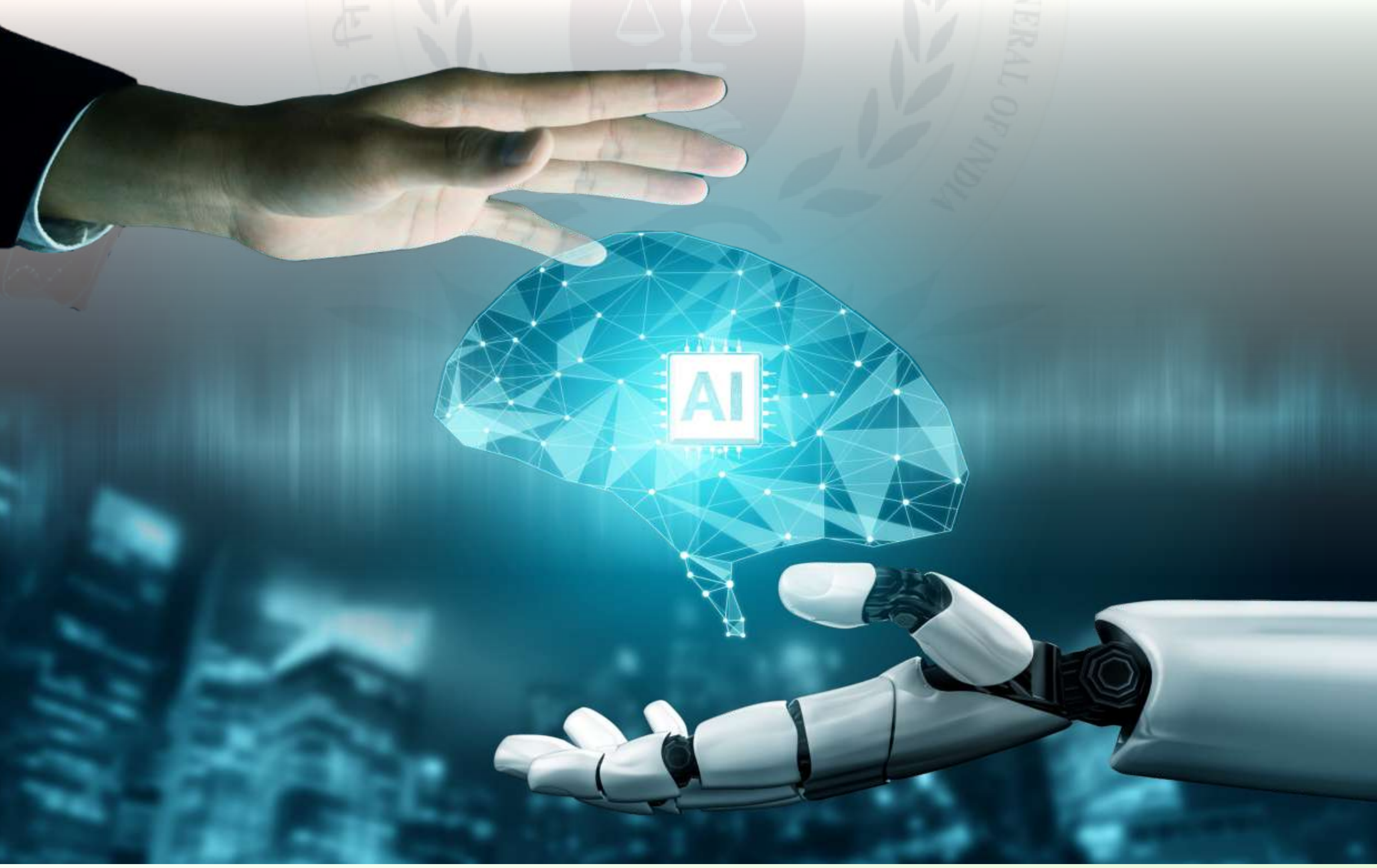

भगवान और इन्सान के बीच दीवार

सिकंदर कुमार
लेखापरीक्षक

भगवान और इन्सान के बीच वो कौन सी दीवार है जो इन्सान को भगवान से मिलने के लिए रोकती है? दीवार वो है जो एक घर के बीच बना दी जाये तो उस घर के दो हिस्से हो जाते है। जैसा कि भारत, पाकिस्तान एक है पर एक सीमा ने एक देश को दो बना दिया। एक जमीन के बीच में दीवार खड़ी कर दो तो उस जमीन के दो हिस्से हो जाते है।

असल में वो कौन सी दीवार है जो इन्सान को भगवान से मिलने के लिए रोकती है? अब हम इसका वर्णन करते है। ये इन्सान के भीतर अहंकार, झूठ, काम, मोह, लोभ, माया, भोग विलास व घमंड की दीवार है। जो इन्सान को भगवान से नहीं मिलने देती। एक तरह से ये दीवार नहीं रोग है जो हम सब को लगा है पर हम में से कोई भी मानने को तैयार नहीं कि:–

''मुझे काम का रोग लगा है, मुझे अंहकार का रोग लगा है, मुझे झूठ का रोग लगा है।''

मेरे मन ने निंदा, बुराई चोरों ठगों को अपना मित्र बना लिया है। जब तक इन्सान खुद ही नहीं मानता कि मैं इन रोगों व दीवारों में घिर चुका हूँ तब तक भगवान नहीं मिल सकते, चाहे वह जितना मर्जी तीर्थ कर ले कर्म कांड कर ले, उसे भगवान नहीं मिल सकते। भगवान भी अहंकारियों व घमंडियों से नाराज हो जाते हैं।

आज हर मनुष्य दुनिया की नजर में धार्मिक है, क्या हकीकत में कोई ऐसा है जो अपनी नजर से देखे कि क्या वह सच में धार्मिक है? उत्तर है नहीं, कोई नहीं। इन्सान सारी जिन्दगी बेअंत गुनाह करता ही जा रहा है। उसकी गुनाह की भूख शांत ही नहीं होती और अपनी सारी उम्र अहंकार, झूठ, काम, मोह, लोभ, माया, भोग विलास व घमंड में गुजार देता है। वर्तमान में मजहब के नाम पर मंदिर, मस्जिद व गुरुद्वारे बन गए है मजहब के नाम पर शोर बहुत होने लगा, झगड़े बहुत होने लगे है। सभी धार्मिक ग्रंथों में 84 लाख योनियों का वर्णन है कि 84 लाख योनियों के बाद ही मनुष्य को जन्म मिला ताकि वह भगवान् को पा सके। परन्तु मनुष्य का ये सांसारिक चोला भी व्यर्थ है। जो मनुष्य को भगवान की प्राप्ति के लिए दिया गया था। गुरु नानक देव जी कहते है कि:–

''करनी ब्खिल आपि विचि राम रहीम कुथाई खलोई, राह शैतानी दुनिया गोई।''

ये पंजाबी की पंक्ति है जो गुरु नानक देव ने अपनी चार उदासी में गायी थी, कहने का भाव है कि न तो भागवत गीता और न ही कुरान शरीफ में एक दूसरे के प्रति नफरत सिखाई, परन्तु दुनिया ने आपस में लड़ने का एक शैतानी रास्ता चुना है। गुरु नानक देव जी के अनुसार मन एक शक्तिशाली शक्ति है जो व्यक्ति को ऊंचाइयों पर ले जा सकती है या फिर उसे नीचा दिखा सकती है। मन को नियंत्रित करना, उसे शुद्ध करना और भगवान के प्रति समर्पित करना ही सच्ची साधना है। मन को पापों से मुक्त करना चाहिए। मन को पापों से मुक्त करने के लिए भगवान का नाम लेना, सत्संग करना, और अच्छे कर्म करना चाहिए। मन वह शक्ति है जो व्यक्ति को प्रेरित कर सकती है, उसे सफल बना सकती है, और उसे महान कार्य करने के लिए प्रेरित कर सकती है। लेकिन यह मन ही है जो व्यक्ति को गलत रास्ते पर भी ले जा सकता है, उसे नुकसान पहुंचा सकता है, और उसे पापों में फंसा सकता है।

संत रैदास के अनुसार मन की कहानी ''मन चंगा, तो कठौती में गंगा'' के माध्यम से व्यक्त की गई है। यह कहावत बताती है कि अगर हमारा मन शुद्ध और पवित्र है, तो हमें किसी बाहरी शक्ति या पूजा–अर्चना की आवश्यकता नहीं है। यदि हमारा मन सच्चा और नेक है, तो वह स्वयं ही गंगा के समान पवित्र है। रैदास जी की शिक्षाओं के अनुसार, मन की शुद्धता के लिए बाहरी अनुष्ठानों से ज्यादा महत्वपूर्ण है भगवान में सच्ची भक्ति और समर्पण। अगर मन सांसारिक इच्छाओं और वासनाओं से भरा है, तो कोई भी पूजा या अनुष्ठान उसे शुद्ध

नहीं कर सकता, लेकिन अगर मन विनम्रता से भगवान के सामने समर्पित हो जाता है, तो वह शुद्ध हो जाता है और हर जगह भगवान को देख सकता है। रैदास जी की इस सीख का अर्थ यह है कि यदि हमारा मन शुद्ध और नेक है, तो हमें बाहरी साधनों की आवश्यकता नहीं है। हमें अपने विचारों और कर्मों को सकारात्मक दिशा देने की आवश्यकता है। इस तरह हम जीवन के वास्तविक मूल्यों को पहचान सकते हैं और अपनी आत्मा को शुद्ध कर सकते हैं।

संत कबीरदास के अनुसार मन एक ऐसी चीज है जो हमेशा बदलती रहती है, जैसे हवा में बहता हुआ एक बादल, यह कभी स्थिर नहीं रहता और हमेशा किसी न किसी चीज में लगा रहता है। वे कहते हैं कि मन को ज्ञान के प्रकाश में लाने की आवश्यकता है, ताकि वह सत्य को पहचान सके। कबीरदास जी कहते हैं कि मन को ज्ञान की ज्योति से प्रकाशित करना चाहिए, जिससे अज्ञान का अंधकार मिट जाए। मन के अनेक मत होते हैं और यह हमेशा एक ही बात पर स्थिर नहीं रहता है।

अगली पंक्ति में सूफी संत शेख फरीद जी बहुत खूबसूरत फरमाते हैं कि:–

''ओथे अमलां दे होने ने नवेड़े, किसे नि तेरी जात पूछनी,
झूठे मान तेरे सब झेडे, किसे नि तेरी जात पूछनी।''

इस पंक्ति में शेख फरीद जी कहते है जब मनुष्य का आखरी समय आएगा तब उसे कोई पूछने वाला ना आयेगा। जिस जाति का तू अहंकार कर रहा आखरी समय में वो भी नहीं पूछी जायेगी, जिसका तू मान कर रहा है आखरी समय में वो भी काम नहीं आएगा। चाहे तेरा खूबसूरत तन, पैसा, पदवी, पत्नी, भाई, बेटा, आलीशान बंगला, मित्र, सब आखरी समय में तेरा साथ छोड़ देंगें और तू मिट्टी में मिल जायेगा। इसी पर बदर मियादाद अली खां व नुसरत फतह अली खां ने बहुत ही खूबसूरत कव्वाली में गाया है।

''मैं क्यों कर जावां काअबे नूं, दिल लोचे तख्त हजारे नूं।''

इस पंक्ति में सूफी संत बुल्ले शाह जी कहते हैं कि मैं काबा क्यों जाऊं, मेरा दिल हजारों खजाने चाहता है। इन्सान का मन ईश्वर भक्ति मार्ग से हट गया है और मोह व माया में लगा है। मक्का जाने से बात नहीं बनती, जब तक कि तुम अपने हृदय से अहंकार को समाप्त नहीं कर लेते, गंगा में जाने से पाप नहीं कटते, चाहे तुम सैकड़ों बार डुबकी लगाओ, गया जाने से बात नहीं बनती, चाहे तुम कितने ही शवों को तर्पण करो। बुल्ले शाह, अहंकार नष्ट हो जाने से बात बनती है।

जैसे कि हमे "महाभारत" में कई घटनाओं से पता चलता है कि पांड्वों ने भगवान के समक्ष भगवान का अपमान करने के सभी सीमाएं लाँघ दी, जिससे भगवान भी बहुत दुखी हुए। अर्जुन अपनी विद्या का अंहकार भगवान के समक्ष कर रहा है कि मेरे जैसा सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर इस धरती पर दूसरा और कोई नहीं। उसे इस बात का भी ज्ञान है कि भगवान वासुदेव कृष्ण तीनों लोकों के स्वामी है वह भगवान विष्णु का अवतार है। महाभारत में, अर्जुन ने कर्ण को ''सूतपुत्र'' कहकर कई बार अपमानित किया। इससे भगवान बहुत नाराज हो गए। भगवान श्री कृष्ण, कर्ण को उनकी दानवीरता और निष्ठा के लिए बहुत मानते थे, और उन्हें अपने ही पुत्र के समान स्नेह करते थे। महाभारत में, कर्ण को एक महान योद्धा और दानी के रूप में चित्रित किया गया है, और कृष्ण उन्हें इसलिए पसंद करते थे क्योंकि वे स्वार्थ रहित दान देते थे। एक बार रात्रि के समय अर्जुन भगवान के समक्ष अंहकार का प्रदर्शन करने लगा। मैंने अपने तीरों से कर्ण का रथ दस पग पीछे कर दिया। परन्तु भगवान वासुदेव कृष्ण कर्ण की ही प्रशंसा करने लगे। अर्जुन ये सब सुन कर गुस्सा हो जाता है कि आप कर्ण की ही प्रशंसा क्यों कर रहे है? वासुदेव कृष्ण अर्जुन से कहते है कि तुम्हारे तीरों से कर्ण का रथ दस पग पीछे हो जाता था तो जब कर्ण के बाण तुम्हारी ओर आते थे तब तुम्हारा रथ दो पग पीछे हट जाता था। हे अर्जुन। तुमे इस बात का भी ज्ञान है कि मैं वासुदेव कृष्ण तीनों लोकों के स्वामी है, विष्णु का अवतार हूँ, तुम्हारे रथ पर पुरे ब्रह्मांड का भार लेकर विराजमान हूँ, रथ के पहिये जो शेष नाग से लिपटे है और रथ के ऊपर भगवान शिव जो हनुमान का अवतार लेकर झंडे में विराजमान है। पर फिर भी कर्ण ने अपने तीर से तुम्हारा रथ दो पग

पीछे की ओर धकेल दिया, अगर मैं, शेष नाग और हनुमान जी इस रथ पर न होते तो तुम्हारा रथ कर्ण के पहले ही बाण से भस्म हो जाता। सुबह महाभारत में अर्जुन भगवान वासुदेव, शेष नाग और हनुमान जी के बिना युद्ध में जाता है, तो कर्ण के पहले ही बाण से रथ भस्म हो जाता। ये देखकर अर्जुन बहुत गुस्सा और शर्मिंदा हुआ। इस तरह हमे भगवान वासुदेव कृष्ण जी का कर्ण के साथ प्रेम और स्नेह देखने को मिलता है। एक बार अर्जुन को हनुमान जी के साथ अपनी धनुर्विद्या को प्रदर्शित करने का अवसर मिला। अर्जुन ने दावा किया कि वह हनुमान जी को बाणों से एक पुल बनाकर उस पर ले जा सकते हैं। हनुमान जी ने परीक्षण के लिए एक शर्त रखी कि अगर पुल उनकी शक्ति सहन नहीं करता है तो अर्जुन को अग्नि में प्रवेश करना होगा। जब हनुमान जी ने पुल पर पहला कदम रखा तो वह टूट गया और अर्जुन को अपना अहंकार स्वीकार करना पड़ा।

फिर से अर्जुन का अहंकार बढता ही चला गया। वह भगवान को कहता है कि मेरे घोड़े की सेवा कर देना, उनको स्नान करवा देना, उनको खाना खिला देना। अर्जुन घने जंगलों में शिकार खेलने के लिए तैयार हो रहा होता है। भगवान ने सब तैयारी कर ली। रथ में शस्त्र, वस्त्र, पानी का घड़ा सब रख लिए, घोड़े रथ के साथ बांध दिए और रथ तैयार हो गया। अर्जुन रथ पर चढ़ गया। भगवान स्वंय ही रथ चलाने लगे। रथ घने जंगलों में जा पहुंचा, अब भगवान ने एक लीला रची। चलते–चलते रथ का एक पहिया निकल गया, रथ दूसरी ओर गिर गया। अर्जुन को कुछ नहीं हुआ पर भगवान लहूलुहान हो गए। खून से लथपथ भगवान अर्जुन को कहते है कि मुझे पानी पिलाओ। अर्जुन पास ही रथ से गिरा हुआ घड़ा उठता है तो सारा पानी गिर जाता है। वह भगवान से कहता है कि प्रतीक्षा करें मैं पानी लेकर आता हूँ। अर्जुन घड़ा लेकर पानी लेने चल पड़ा। चलते–चलते उसकी नजर एक कुटिया पर पड़ी, वह उस कुटिया के अन्दर गया तो उसने देखा कि यहाँ तो पानी से भरे घड़े ही घड़े है, पहले अर्जुन ने पानी पिया और जैसे ही उसने पानी का भरा दूसरा घड़ा उठाया तब उसकी नजर दीवार पर पड़ी। वह देखता कि बड़े–बड़े शस्त्र, धनुष व बाण दीवार पर लटके है। ये किसके हो सकते है? मैंने अपने जीवन में ऐसी तलवार, धनुष व बाण कभी नहीं देखे। अब अर्जुन ने पानी से भरा हुआ घड़ा धरती पर रख दिया। उसने दीवार पर लटकी हुई तलवार उठा ली और अपनी पूरी शक्ति लगा दी पर अर्जुन मियान से तलवार नहीं निकाल सका। अब अर्जुन सोच में पड़ गया कि ये तलवार मियान से निकलती ही नहीं, इसे चलता कौन होगा? ये किसकी तलवार होगी? फिर अर्जुन ने धनुष उठाया, पर उससे बाण धनुष में लगा ही नहीं। अर्जुन अपने आप को समझता था कि मैं भगवान राम से भी ऊपर हूँ। अर्जुन ने अपनी पूरी शक्ति लगा दी पर न तो मियान से तलवार निकाल सका और न ही धनुष को खींचकर बाण लगा सका। अर्जुन ने हथियार रख दिए और कहने लगा कि कृष्ण मरता है तो मर जाये। मेरे जैसा सर्व श्रेष्ठ धनुर्धर इस धरती पर दूसरा और कोई नहीं, मैं ये जानकर जाऊंगा कि ये शस्त्र किसके है? आप सभी देख सकते है, अहंकार मनुष्य का पीछा नहीं छोड़ता कि मुझसे भी सर्वश्रेष्ठ इस धरती पर दूसरा ओर कोई है। इसे हमें पता चलता कि मनुष्य का मन अहंकार, झूठ, काम, मोह, लोभ, माया, भोग विलास व घमंड के साथ जोड़ा हुआ है, पर फिर भी मनुष्य इसको मानने को तैयार ही नहीं है। इतने में कुटिया में हलचल हुई, कुटिया के बाहर से कदमों की आवाज सुनाई देती है। एक बुजुर्ग माता कुटिया के अंदर आई। अर्जुन उस बुजुर्ग माता को देखता है कि वह बुजुर्ग माता का शरीर और बोली दोनों कांप रहे हैं। बुजुर्ग माता बोली कि कौन है, जो मेरी कुटिया में आया है? अर्जुन बोला कि मैं एक शिकारी हूँ, मैं यहाँ पानी पीने आया हूँ, अर्जुन ने अपना असली परिचय नहीं दिया। बुजुर्ग माता ने उसे कहा कि पानी का घड़ा चाहिए, तो ले जाओ, यहाँ से चले जाओ। मेरी भजन बंदगी का समय हो गया है, मेरे पास अधिक समय नहीं है बातों का। अर्जुन ने कहा कि मैंने पानी पी लिया है और एक घड़ा साथ में भी ले लिया है, पर आपसे एक सवाल पूछना है कि ये शस्त्र किसके है? फिर मैं यहाँ से चला जाऊंगा। बुजुर्ग माता ने उसे पूछा, कि तुझे मेरे बिना तीसरा ओर कोई दिख रहा है? मेरे सिवा ये शस्त्र किसके होंगे? ये शस्त्र मेरे ही है। जब बुजुर्ग माता ने ये बात कही, तब अर्जुन बहुत जोर से हंसा। अर्जुन उसे कहता कि बोलते हुए तो आपकी आवाज कांपती है, बुढ़ापे में आपको मानसिक रोग लग गया है। बुजुर्ग माता कहती है, बात तो तेरी ठीक है। तुझे यकीन नहीं आता तो फिर ये तलवार मुझे पकड़ा। जैसे ही अर्जुन ने तलवार उसे दी। बुजुर्ग माता ने

तलवार को मियान से निकल दी, अर्जुन देखता ही रह गया। फिर बुजुर्ग माता ने धनुष खीच कर बाण आसमान में कई मील की दूरी तक चलाया, अर्जुन का मुँह खुला रह गया। वह आश्चर्य में पड़ गया कि मेरे जैसा सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर इस धरती पर दूसरा और कोई नहीं है पर ये तो मेरे से कई गुणा सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर है। अब अर्जुन डरता हुआ कहने लगा कि ये शस्त्र आपके किसी काम के नहीं है, पर मैं शिकारी हूँ मेरे काम आयेंगें। माता कहने लगी कि आपकी बात ठीक है पर ये शस्त्र मैंने अपने दुश्मन के लिए रखे है। अर्जुन फिर जोर–जोर से हंसा कि आपकी किसके साथ दुश्मनी हो सकती है? बुजुर्ग बोली कि इस तलवार से मुझे द्रौपदी का वध करना है, मेरे दो दुश्मन है। अर्जुन कांप गया कि यह तो मेरी ही पत्नी की हत्या करना चाहती है। अर्जुन बोला कि द्रौपदी को क्यों मारना चाहते है आप? माता ने उसे कहा कि द्रौपदी कहती है मैं भगवान श्री कृष्ण प्रिय भक्त हूँ पर करती है मेरे भगवान कृष्ण की निरादरी, जिस दिन मुझे द्रौपदी मिल गई, उसका सिर धड़ से अलग कर दूंगी। उसने राजा धृतराष्ट्र के होने का अहंकार किया, गुरु द्रोणाचार्य के होने का अभिमान, पांच पति पांडवों के होने का घमण्ड किया, फिर आपने आप पर गर्व किया। जब द्रौपदी को भरी सभा में उसे निवस्त्र किया जा रहा था, तब जाकर भगवान को याद किया। द्रौपदी अभिमान कर रही थी तो फिर राजा धृतराष्ट्र, गुरु द्रोणाचार्य, पांडव उसे बचाने क्यों नहीं आये? द्रौपदी ने मेरे भगवान को अपमानित किया है।

द्रौपदी के अहंकार के प्रभाव:–

- **महाभारत युद्धः–**

  द्रौपदी का अहंकार, विशेषकर कर्ण का अपमान, महाभारत युद्ध का एक महत्वपूर्ण कारण बना।

- **कौरवों का अपमानः–**

  द्रौपदी ने दुर्योधन और अन्य कौरवों को भी अपमानित किया, जिससे उनका अहंकार और भी बढ़ा और महाभारत युद्ध की नींव रखी गई। कहा जाता है कि इंद्रप्रस्थ में युधिष्ठिर के राज्याभिषेक के समय द्रौपदी ने महाभारत के बीज बो दिए थे। राजमहल के बीच बने हुए एक मायावी कुंड में जब दुर्योधन गिर गया तो द्रौपदी ने उन्हें अंधे का पुत्र अंधा कहकर अपमानित किया था।

- **व्यक्तिगत कष्टः–**

  द्रौपदी का अहंकार उन्हें कई कष्टों से भी गुजारता रहा। उनका अहंकार उन्हें अक्सर गलत निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता था, जिससे उन्हें व्यक्तिगत रूप से नुकसान होता था।

अर्जुन पूछता है कि दूसरा आपका दुश्मन कौन है? उसने कहा कि मेरा दूसरा दुश्मन पांचों पांडव है। अर्जुन कहता है कि पांडवों की आपसे क्या दुश्मनी हो सकती है? वह कहती है कि उन पांचों पांडवों ने भी द्रौपदी की तरह मेरे भगवान को अपमानित किया है। पांडवों ने भी द्रौपदी की तरह अपने स्वार्थ के लिए भगवान का इस्तेमाल किया, यह सुनकर अर्जुन वहां से भाग जाता है और वापस उस स्थान पर जाता है जहा पर भगवान लहूलुहान हो गए थे। जब वह वहां पहुँचता है और देखता है कि रथ सही सलामत है, भगवान कृष्ण रथ पर विराजमान है और बांसुरी बजा रहे है। तब जाकर अर्जुन को एहसास हुआ कि मैंने अपने निजी स्वार्थ के लिए भगवान का इस्तेमाल किया है।

भीम भी अपने बल और शक्ति के कारण बहुत अहंकारी हो गया था। एक बार उसने अपनी ताकत का प्रदर्शन करते हुए बूढ़े वानर (हनुमान) के साथ घमंड से बात की थी, भीम ने हनुमान जी से अपनी पूंछ हटाने को कहा, लेकिन हनुमान जी ने भीम को पूंछ हटाने के लिए कहा भीम ने पूंछ को हटाने की कोशिश की, लेकिन वह उसे हिला भी नहीं पाया। इस तरह हनुमान जी ने भीम के अहंकार को तोड़ दिया था।

भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, मन का बेचैन होना उसका स्वभाव है। हमारे मन को लगता है कि अगर वह अलग–अलग बातों के बारे में सोचता रहेगा तो हमें आने वाली हर मुश्किल और मुसीबत से बचा लेगा, पर ऐसा होता नहीं है। हम अपने जीवन का काफी अधिक समय सोच–विचार करके परेशान होने में निकाल देते हैं। मन को नियंत्रित करना, भगवान कृष्ण लीला के अनुसार, एक महत्वपूर्ण कार्य है। भगवत गीता

में, कृष्ण बताते हैं कि मन एक रथ का सारथी है, जो आत्मा को इधर–उधर ले जा सकता है। अपने विचारों और भावनाओं को नियंत्रित करके, व्यक्ति अपने जीवन का मार्ग सही दिशा में तय कर सकता है।

मन का सारथीः–

- मन को शरीर का सारथी कहा गया है, जो आत्मा को लेकर चलता है।
- यह मन ही है जो इंद्रियों को नियंत्रित करता है और उन्हें विषयों की ओर ले जाता है।
- यदि मन को वश में कर लिया जाए, तो यह आत्मा को प्रभु के चरणों में ले जा सकता है।

भगवान कृष्ण का उपदेशः–

- भगवत गीता में, कृष्ण अर्जुन को बताते हैं कि मन का स्वभाव चंचल होता है।
- मन को शांत और स्थिर करने के लिए, व्यक्ति को अपने कर्मों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और ईश्वर की भक्ति में लीन रहना चाहिए।
- भगवान का कहना है कि जो व्यक्ति अपने मन को वश में कर लेता है, वह मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

मन को नियंत्रित करना भगवान कृष्ण की शिक्षा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जब हम अपने मन को नियंत्रित करते हैं, तो हम अपने जीवन का मार्ग सही दिशा में तय कर सकते हैं और मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। गीता में मन को एक बेचैन और चंचल इकाई के रूप में वर्णित किया गया है, जो आत्मा का एक साधन है, यह एक ऐसा साधन है जिसे नियंत्रित किया जा सकता है और जो मित्र और शत्रु दोनों हो सकता है। मन को नियंत्रित करने के लिए अभ्यास और वैराग्य की आवश्यकता होती है। यह हमेशा भटकता रहता है और किसी एक जगह पर टिक नहीं पाता।

ओशो ने भगवान और इन्सान के बीच बहुत सुंदर रचना की है। ओशो एक भारतीय, दार्शनिक व विचारक के प्रवर्तक थे। वे संपूर्ण विश्व के सबसे प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु थे। ओशो कहते है कि लोग राम के लिए लड़ रहे है, अल्लाह के लिए लड़ रहे है, अपने पिता के लिए कभी न लड़ेंगे। उनके पिता चार घंटे से पीने के लिए एक ग्लास पानी का मांग रहे हैं, अस्पताल में जाकर मेरी दवा ला दो परन्तु उनके लिए कुछ नहीं करेंगें। अपने पिता की जिन्दगी के लिए न लड़ेंगें। राम के लिए लड़ रहे हैं, भगवान राम अपने स्वयं सर्व शक्ति व बाहुबली है वह स्वयं लड़ लेंगें, तुम कौन होते हो? हवा चल रही है, अल्लाह के लिए लड़ रहे हैं। तुम कौन होते हो? पहले तुम अपने लिए लड़ो। पहले तुमे अपने आपसे पूछो कि मैं कौन हूँ? फिर सवाल करो कि भगवान कौन है? ओशो ने बुल्ले शाह का एक खुबसूरत गीत का वर्णन किया है किः–

''ज्ञान की हजारों किताबे पढ़ी है, क्या आपने कभी खुद को पढ़ने की कोशिश की है।''

कहने का भाव है कि तुमने बहुत कुछ सीखा है और हजारों किताबें पढ़ी हैं, क्या तुमने कभी खुद को पढ़ा है? तुम मस्जिदों और मंदिरों में गए हो, क्या तुमने कभी अपनी आत्मा का दौरा किया है? तुम शैतान से लड़ने में व्यस्त हो, क्या तुमने कभी अपने बुरे इरादों से लड़ाई की है? तुम आसमान तक पहुँच गए हो, लेकिन तुम अपने दिल में जो है उसे पाने में सफल रहे हो।

आज के वर्तमान युग में इन्सान ने अहंकार, झूठ, काम, मोह, लोभ, माया, भोग विलास व घमंड को अपना मित्र बना लिया है। एक बार एक व्यक्ति ने साधु से पूछा कि सांप के दांत, बिच्छू के डंक और इन्सान के मन में कितना जहर भरा है? साधु ने मुस्कराते हुए कहा कि सबसे अधिक विष तो इन्सान के मन में भरा हुआ है, जो हमे हर समय डंक मरता है पर हमें इसका एहसास नहीं होता, जानवर के हमले का हमे अहसास हो जाता है, पर इन्सान आप से मित्रता भी करता है, आपके साथ बैठा भी होता है, पर हमे उसके हमले का कभी भी एहसास नहीं होता। इसलिए इस पृथ्वी पर इन्सान से बड़ा कोई शैतान नहीं है।

इन्सान बहुत ही चालक है कि उसने भगवान को दीवारों में कैद कर दिया है। मंदिर, मस्जिद बना कर भगवान को कैद कर दिया ताकि वह मंदिर मस्जिद के बाहर अपनी मन मर्जी कर सके। परन्तु इन्सान को ज्ञान नहीं की भगवान को कभी भी कैद नहीं किया जा सकता, भगवान तो हर कण, हवा, मिट्टी, पेड़, पौधे, पहाड़,

नदी, असमान, सागर हर जगह विराजमान है। भगवान के लिए कोई मंदिर, मस्जिद, गाँव, शहर, राज्य, देश, जाति, धर्म, भाषा, सीमा नहीं होती। भगवान इस पूरे ब्रह्मांड के भगवान है। उनकी आज्ञा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिलता, तो इन्सान कौन होता है, भगवान को परखने वाला?

इतिहास में संपूर्ण विश्व के सबसे प्रभावशाली महान दार्शनिक, विचारक, आध्यात्मिक गुरु, भक्त व संत रैदास, मीरा, भगत धन्ना, माई भागो, संत कबीरदास, स्वामी विवेकानंद, राम कृष्ण परमहंस, ओशो आदि हुए है, जिनका इतिहास के पन्नों में उनका नाम अमर है, इन्होंने इन्सान को भगवान से मिलने का मार्ग बताया। किसी भी तरह के कर्म कांड, पूजा व पाठ करने लिए नहीं कहा। आपके के भीतर सच्ची श्रद्धा, सच्ची भावना, सच्ची लगन, सच्चा प्रेम व स्नेह होना चाहिए, अभी हमने जिन नामों का जिक्र किया है दुनिया उन पर हंसीं और जिन पर दुनिया हंसी उनका ही नाम इतिहास के पन्नों में अमर हो गया।

आखिर में हम फिर दोहराते हैं कि जब तक मनुष्य यह मानने को तैयार नहीं किः–

''मुझे काम का रोग लगा है, मुझे अंहकार का रोग लगा है, मुझे झूठ का रोग लगा है।''

मनुष्य के मन ने निंदा, बुराई चोरों ठगों को अपना मित्र बना लिया है। जब तक इन्सान खुद ही नहीं मानता कि मैं इन रोगों व दीवारों में घिर चुका हूँ तब तक वह भगवान नहीं मिल सकता।

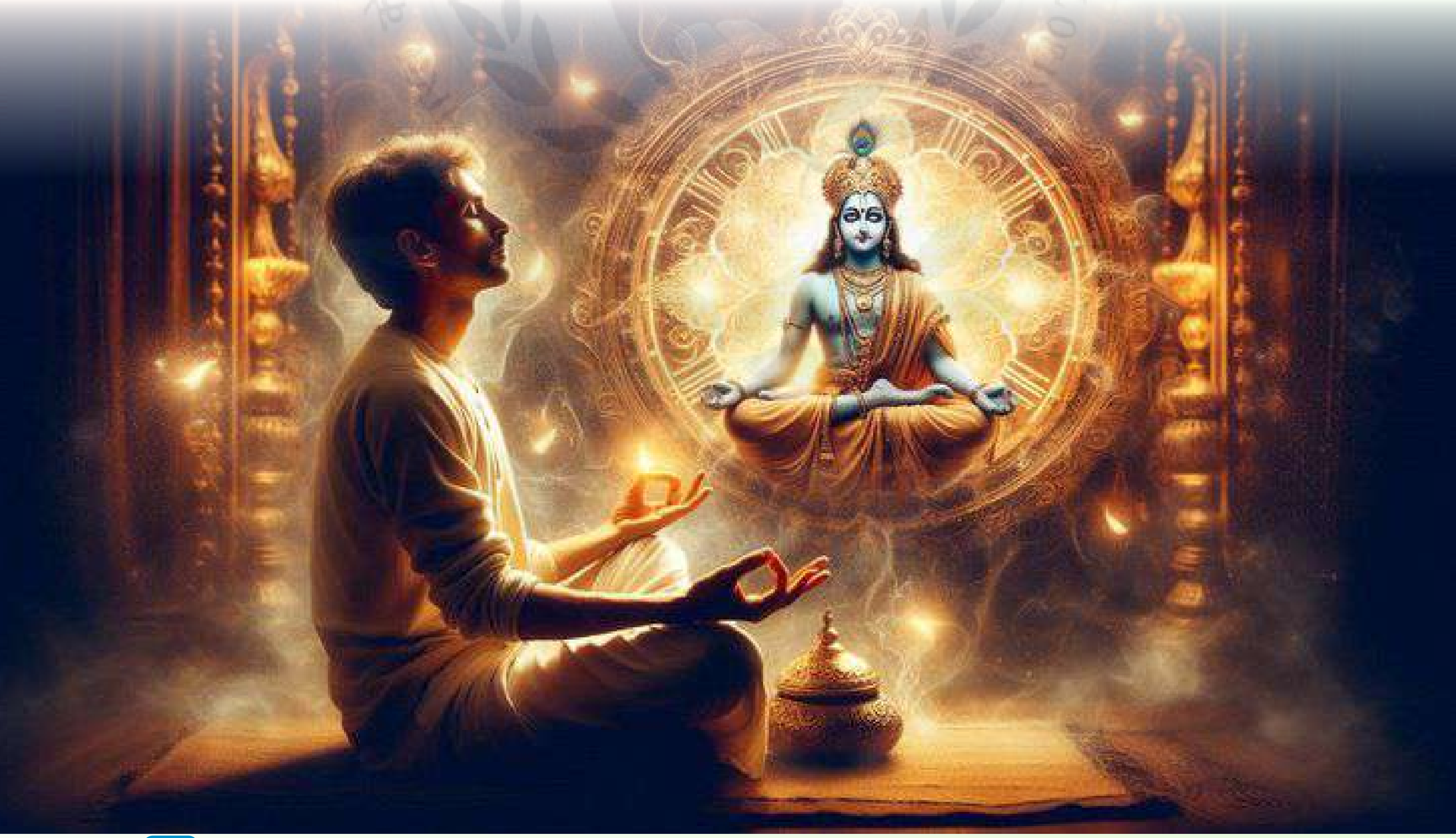

मेरा प्रिय विषय –ज्योतिष

विशेष बिस्वाल
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ज्योतिष के सम्बन्ध में कुछ भी कहना और सुनना ध्यान आकृष्ट करता है । ज्योतिष खोज का ऐसा क्षेत्र है जिसका विस्तार अनंत है और अधिक गहरे तक जाए बिना इसका ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है। प्रत्येक मनुष्य संसार का प्रतिबिम्ब है एवं सारे संसार की झलक को मनुष्य में पाया जाता है। इसे जानने की विधि को ज्योतिष कहा जाता है। ज्योतिष विद्या मानव और ब्रह्माण्ड के बीच सम्बन्ध को ध्यान में रखती है। भारत में ज्योतिष को एक विशेष स्थान प्राप्त है।

समस्त ब्रह्माण्ड में एक प्रबुद्ध ऊर्जा सर्वत्र क्रियाशील है, उसमें भूमिका निर्धारित करने का सामर्थ्य है। किसी घटना के विषय में घटने से पहले ही सूचना देना तभी संभव है जब यह जान लिया जाए की, प्रकृति की भूमिका किसी रूप से पूर्व निश्चित है।

प्राचीन महर्षियों ने मन की गंभीरता और एकाग्रता के माध्यम से इस महान एवं मौलिक सत्य को खोज निकाला है। ज्योतिष हमें एक ऐसा माध्यम प्रदान करता है, जिस से हम जीवन के गूढ़ तथ्यों को समझते हुए आत्मोन्नति कर सकते हैं।

महर्षियों ने कर्म और पुनर्जन्म के तथ्य को खोज निकाला है। कर्म का नियम अनेक जन्मों तक चलता रहता है, कर्ता को अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है, यदि वह सत्य, विद्या और बुद्धि द्वारा अपने कर्मों का निर्णय और नियंत्रण करने में सफल न हो जाए।

ज्योतिष हमारे पूर्व कर्मों का फल ज्ञात कराता है, इस वर्णन को 'ग्रहों का प्रभाव' कहा जाता है। महर्षि पतंजलि जी परामर्श देते हैं की आध्यात्मिक सिद्ध अवस्था में पहुंचे हुए सिद्ध ऋषियों को साधना प्राप्त होती है कि वे ग्रह गणों के साथ सीधा संपर्क स्थापित कर सकते हैं तथा उन के रहस्यों को यांत्रिक उपकरणों के बिना भी ज्ञात कर सकते हैं। अनेक उच्च कोटि के विद्वान और मनीषी प्रत्येक काल में ज्योतिष की सत्यता का अनुमोदन करते रहे हैं और अपने जन्म पत्र का फलादेश विवेचन करवाते रहे हैं।

मानव के अन्दर स्वतंत्रतापूर्वक संकल्प करने की क्षमता है। जहाँ एक ओर कर्मों का फल है, जो अवश्य एवं अटल है, वहां दूसरी ओर स्वच्छन्द बुद्धि अर्थात इच्छानुसार कर्तव्य करने की आजादी भी है। मनुष्य का वर्तमान जन्म अनादी काल से चली आ रही जन्मों की श्रृंखला में एक कड़ी है। एक बार कर्म हो जाने के बाद एक क्षण, एक दिन, एक वर्ष अथवा एक जन्म या अनेक जन्मों में फलीभूत होने का समय आने पर कृत कर्म का फल अवश्य प्राप्त होता है।

व्यक्ति जो कर्म करता है वह उसके विचारों पर आश्रित है। अतः व्यक्ति स्वयं अपने कर्मो को निर्मित करता है, जैसे उसके मन में विचार उपजते हैं। वे कर्म(पूर्व जन्म के), जिनके फलस्वरुप व्यक्ति को जन्म तथा परिवार और वातावरण मिला, संचित कर्म कहलाता है, संग्रह किए हुए कर्म जो वह जन्म के पश्चात करता है, प्रारब्ध कहलाता है। जब कोई अपने पूर्व कर्मो के वश में हो कर कर्म करे तो उसे व्यक्ति के संचित कर्म से प्रेरित जानें, परन्तु जब वह अपने जीवन में आंशिक स्वतंत्र सत्ता से कुछ करे, तो उसे कर्मो का प्रारब्ध समझना चाहिए।

व्यक्ति कुछ कर्म अपने शरीर द्वारा करता है ये सब 'कायक' क्रियाएं कहलाती हैं। जो वह वाणी से करता है, 'वाचक' कहलाते हैं। शुभ और अशुभ चिंतन 'मानसिक' कर्म कहलाते हैं। अच्छे और बुरे संचित कर्म जो हमारे लेखे में हैं उनमें संकल्प शक्ति की सहायता से प्रारब्ध कर्मों के द्वारा कमी और वृद्धि की जा सकती है।
जन्म कुंडली में चन्द्र का स्थान महत्वपूर्ण है, यह मन का कारक है। जन्म कुंडली में चन्द्र की स्थिति 'भावपूर्ण व्यक्तित्व' को प्रकट करती है एवं लग्न की राशि तथा उस राशि का स्वामी, 'वास्तविक व्यक्तित्व' को प्रकट करते है। वास्तविक व्यक्तित्व वह है, जो एक भौतिक शरीर के भीतर इस संसार में जन्म लेता है। यह अपने संग

विचार, अनुभूति, रुचियों को लेकर जन्म लेता है जो उसे अपने पूर्व अस्तित्व से प्राप्त हुई हैं। प्रत्येक व्यक्ति 12 राशियों के अनुसार एक न एक भाव के अन्दर अवश्य आ जाता है और उसी के प्रभाव से विकसित होता रहता है। मनुष्य का अन्य के साथ समरूप होना और कई बातों में अद्वितीय होना एक विशेषता है।

हमारी देह के अणु निश्चित रूप से सूर्य से ओत–प्रोत हैं। जन्म पत्रिका में सूर्य, चन्द्र और लग्न यथाक्रम मानव की आत्मा, मन और देह को व्यक्त करते हैं। अन्य ग्रह इनका भावार्थ बताने में सहायक हैं। सूर्य के रासायनिक तत्व न केवल इस धरती पर पाए जाने वाले तत्वों के बराबर हैं, वे हमारी देह के भीतर पाए गए तत्वों से भी मेल खाते हैं।

चन्द्र के प्रभाव के कारण त्वचा रोग उत्पन्न समझे जाते हैं, अमावस्या के समय रोग की प्रचंडता बढ़ जाती है यह प्रमाणिक तथ्य है। ज्योतिष के नियमों के अनुसार मंगल–ग्रह युद्ध का नेतृत्व करने वाला स्वामी है। उच्च सैनिकों के जन्म पत्रों में मंगल का शक्तिशाली घर में होने की सम्भावना होती है। संसार के प्रसिद्ध व्यक्तियों का जन्म फरवरी माह में हुआ है, शोध बताते हैं। मेष और सिंह राशियाँ लग्न के रूप में अधिक पाई जाती हैं, किन्तु कन्या राशी बहुत कम लग्न के रूप में देखी जाती है।

जब ग्रह गण विभिन्न राशियों में प्रवेश करते हैं, तो उन के अपने अपने बल में भिन्नता आती है और ऋतुओं में परिवर्तन का कारण बनते हैं। जब ग्रहों की युतियाँ (conjuctions) होती हैं, उनकी ऊर्जा के मेल से धरती पर भूकंप आते हैं।

जुड़वा बच्चे कभी–कभी एक से होते हैं, और कभी–कभी भिन्न प्रकृति के होते हैं। ऐसा इस कारण होता है कि जब जन्म के मुहूर्त में तृण मात्र भी अंतर हो जाता है।

विद्वानों की यह घोषणा है कि मनुष्य को कर्म करने का पूर्ण अधिकार है , परन्तु किए हुए कर्मों का उनके फल पर कोई अधिकार नहीं है। जन्म कुंडली व्यक्ति के चरित्र और स्वभाव को प्रदर्शित करती है , यदि जातक की कुंडली यह दिखाए कि वह एक अपराधी बनेगा तो इसका अर्थ केवल इतना है की जातक के अन्दर अपराध की ओर झुकाव होगा , परन्तु उसकी ऐसी वृत्ति को शिक्षण एवं चित्त की एकाग्रता से रोका जा सकता है।

ज्योतिष को भाग्यवाद पर आश्रित नहीं बनाना चाहिए। इसके माध्यम से पहले से घटना की सम्भावना को जाना जा सकता है और आकाशीय चेतावनी की ओर ध्यान देकर इसके दुष्प्रभाव को सीमित किया जा सकता है।

ज्योतिष का उपयोग शिक्षा की दिशा और वृत्ति (प्रोफेशन) का चुनाव करने के लिए किया जा सकता है। अनेक लोग जो अनुपयुक्त व्यवसाय में पड़ जाते हैं उनकी सारी शिक्षा का उत्तम उपयोग नहीं हो रहा है। एक ज्योतिष उसी दिन, यह जान सकता है, जब बच्चे का जन्म होता है, कि उसका मनोयोग विज्ञान की ओर होगा अथवा संगीत शास्त्र की ओर। विकास का रहस्योद्घाटन करने में भी ज्योतिष सहायक है। ज्योतिष का उद्देश्य लोगों के चरित्र और भाग्य की विवेचना करना है। यह एक अनोखा यंत्र है, जिसके माध्यम से भावी घटनाओं को खोजा जा सकता है।

ज्योतिष गतिरोध तथा दुर्गम पथ से निकलने का मार्ग दिखाता है। ज्योतिष हमें किसी व्यक्ति से घृणा की स्थिति से बाहर निकालता है तथा नवीन सदाचार की भावना जागृत करता है। यह दोष दृष्टि से मुक्ति प्रदान करने में सहायक है।

अतः ज्योतिष एक रोचक और प्रिय विषय है।

मधुर वाणी

सुदेश कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

मधुर वाणी का अर्थ है "मीठी बोली" या ऐसी बोली जो सुनने में अच्छी लगे। यह एक ऐसी बोली है जो दूसरों को प्रसन्न करती है, सम्मान दिलाती है और रिश्तों को मजबूत करती है। मधुर वाणी का उपयोग दूसरे के प्रति दया, सम्मान और सहानुभूति व्यक्त करने के लिए किया जाता है। मधुर वाणी सुनने वालों को खुशी देती है और सकारात्मकता फैलाती है।

वाणी की मधुरता हृदय–द्वार खोलने की कुंजी है। एक बात को हम कटु शब्दों में कह सकते हैं और उसी बात को हम मधुर बना सकते हैं। वार्तालाप की शिष्टता मनुष्य को आदर का पात्र बनाती है और समाज में उसकी सफलता के लिए रास्ता साफ कर देती है।

बात करते समय किसी के मन को मोह लेने की शक्ति का नाम मधुर वाणी है। जहाँ व्यक्ति द्वारा बोले गए मधुर व कोमल शब्द मित्रता का विस्तार करते हैं, वही कठोर शब्द शत्रु भाव बढ़ाते हैं। मनुष्य से मनुष्य का सम्बन्ध वस्तुओं के आदान–प्रदान पर उतना निर्भर नहीं करता जितना कि शब्दों के आदान–प्रदान पर करता है। व्यवहार में देखने में आता है कि घर आए व्यक्ति के लिए यदि आप स्वागत के दो शब्द कह देते हैं तो आपके द्वारा की गयी साधारण अतिथि सेवा भी अच्छी सिद्ध होती है। सयाने लोग कहते हैं कि तलवार का घाव समय के साथ भर जाता है पर वाणी का घाव कभी नहीं भरता।

वाणी की मधुरता न केवल व्यक्तिगत संबंधों को मजबूत बनाती है बल्कि समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा भी दिलाती है, जो लोग मीठी वाणी का प्रयोग करते हैं वे अक्सर अपने आसपास के लोगो के दिलों में विशेष स्थान बना लेते हैं। यह एक प्रकार का वशीकरण है, जो बिना किसी बल प्रयोग के दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

मधुर वाणी का प्रभाव इतना शक्तिशाली होता है कि यह कठोर हृदय को भी पिघला सकता है। जीवन का सच्चा सुख तब मिलता है, जब हम अपने अहंकार को एक तरफ रखकर मधुरता से भरे सुवचन बोलते हैं। इससे दूसरों के जीवन में भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इसलिए कबीरदास जी ने कहा है–

"ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय,
औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय"

हिंदी : हमारी पहचान

दिनेश
लेखापरीक्षक

हिंदी एक अत्यंत उपयोगी भाषा है, विशेषकर भारत जैसे विविध सांस्कृतिक देश में। यह संचार, शिक्षा, साहित्य, और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हर पांच में से एक व्यक्ति हिंदी भाषा में इंटरनेट का प्रयोग करता है। हिंदी में कई प्रकार के सॉफ्टवेयर एवं स्मार्टफोन एप्लीकेशन उपलब्ध हैं। फेसबुक, ट्विटर और व्हाट्सएप में हिंदी में लिख सकते हैं। आज के दौर में करोड़ों लोग हिंदी भाषा में कंप्यूटर का प्रयोग करते हैं। वर्तमान समय संचार प्रौद्योगिकी का है, जिसमें भारत के गांवों को भी इससे जोड़ा गया है। भारत के ग्रामीण इलाके में रहने वाले लोग सिर्फ हिंदी भाषा के साथ ही दुनिया के साथ संपर्क में हैं। हिंदी भाषा के अनेक रूप है संपर्क भाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा। हिंदी प्रदेशों में हिंदी भाषा आम बोलचाल, बाजार, व्यापार, राजनीति, पत्रकारिता, सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों में आपसी वैचारिक आदान–प्रदान के रूप में काम में आ रही है, बल्कि अब इलेक्ट्रोनिक मीडिया के द्वारा देश की सीमाओं से परे विदेशों में भी फैलती जा रही है। यह हिंदी का एक संपर्क भाषा का रूप है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीयता की भावना का माध्यम बनकर संपूर्ण राष्ट्र की वाणी का प्रतिनिधित्व करने के लिए हिंदी को अपनाया गया और उसे स्वतंत्रता के बाद देश की अन्य 22 भाषाओं को साथ–साथ राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान करने वाली भाषाओं के रूप में संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान दिया गया। सरकारी कामकाज के माध्यम के रूप में हिंदी को भारत संघ द्वारा एवं हिंदी प्रदेशों द्वारा अपनाया गया है, वह हिंदी का राजभाषा का रूप है। किंतु विचारणीय यह है कि हम आजादी के बाद हिंदी को राजभाषा के रूप में अधिक विकसित करते जा रहे हैं या उसकी भूमिका को सिकोड़ते जा रहे हैं। अंग्रेजी शासन से पूर्व मुगल शासन में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में तो थी किंतु राजकाज की भाषा फारसी या उर्दू ही थी। यद्यपि निचले स्तर पर सर्वसाधारण के हिसाब–किताब हिंदी में रखे जाते थे। आज हिंदी केवल हिंदुस्तान की भाषा न होकर संपूर्ण विश्व की भाषा बन चुकी है। हिंदी भाषा का इतना विकास हुआ है, कि स्टार चैनल ने अपना टी.आर.पी. बढ़ाने के लिए हिंदी भाषा का प्रयोग प्रारंभ कर दिया। कुल मिलाकर, हिंदी एक अत्यंत उपयोगी और बहुमुखी भाषा है जो भारत में संचार, शिक्षा, साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

"राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है।"

–बालकृष्ण शर्मा (नवीन)

महेन्द्र सिंह
वरिष्ठ अनुवादक

पासवर्ड देवता

रामप्रसाद ने हांफते हुए अपना बैग रखा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी, श्री गुप्ता जी को नमस्कार किया और कम्प्यूटर ऑन किया। रामप्रसाद जी कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), जीतगढ., जींद में वरिष्ठ लेखापरीक्षक के पद पर कार्यरत है। यह कार्यालय बहुत ही सुंदर है जिसमें एक ओर सुंदर पार्क है, दूसरी ओर कार पार्किंग है तथा परिसर में ही महादेव का छोटा सा मंदिर है, जहां कार्मिक कभी–कभी माथा टेकने जाते रहते हैं। भवन अपने आप में इतना सुंदर है कि जो भी देखता है, मोहित हो जाता है। ''रामप्रसाद वो फाइल पुटअप कर दो बहुत जरूरी है'', गुप्ता जी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने जोर देकर कहा, रामप्रसाद जी ने भी उसी उत्साह से जी सर कह कर सहमति जताई। रामप्रसाद वही कार्मिक है जिन्होंने उस समय अदम्य साहस का परिचय दिया था जब कार्यालय में कम्प्यूटर पहली बार आया था और 50 वर्ष पार कर चुके कुछ कार्मिकों ने कम्प्यूटर पर काम करने के भय से स्वैच्छिक रिटायरमेंट ले ली थी। 40 वर्षीय रामप्रसाद ने एक लंबे संघर्ष के बाद कम्प्यूटर पर कार्य करने की दक्षता प्राप्त कर ली थी। परंतु अब उसके सामने एक बहुत विकट समस्या थी, ई–ऑफिस। वर्तमान में यही संघर्ष जारी है।

रामप्रसाद जी भी इसी समस्या से जूझ रहे थे। सर्दी में भी उसके चेहरे पर पसीना साफ झलक रहा था। भला ऐसा क्यों? क्योंकि वह ई–ऑफिस का पासवर्ड भूल गया था। फाइल पुट–अप करना अनिवार्य था। फिर अचानक याद आया कि उसने यह पासवर्ड एक डायरी में लिखा था, परंतु वह तो घर पर थी, अब क्या करे? रामप्रसाद इसी उलझन में था। उसने हिम्मत जुटाते हुए सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी से कहा, "सर एक समस्या आ गई है, मैं पासवर्ड भूल गया जोकि एक डायरी में लिखा हुआ है, जो घर पर है। यदि आप अनुमति दें तो वो ले आऊं?" "अरे यार तुम भी अजीब हो, डी.ए.जी. सर फाइल का इंतजार कर रहे हैं और तुम हो कि पासवर्ड भूल गए, क्या करूं तुम्हारा? जल्दी जाओ और जल्दी आओ, फाइल बहुत जरूरी है", गुस्से एवं उदासी के स्वर में सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने कहा। राम प्रसाद घर जाता है, डायरी ढूंढता है। राम प्रसाद की धर्मपत्नी ने कहा कि वह तो स्वाति स्कूल में ले गयी। स्वाति उसकी बेटी है जो पांचवी कक्षा में पढ़ती है। वह बिना समय गवांए स्कूल जाता है। स्वागत कक्ष में पूछा तो कहा गया कि आप 30 मिनट बाद मिल सकते हैं, परंतु रामप्रसाद के पास समय नहीं था, उसे एक मिनट एक घंटे के बराबर लग रहा था। वह अनुभाग के बारे में सोचने लगा कि सर इंतजार कर रहें होंगे। तभी उसकी दस वर्षीय बेटी ने कहा पापा आप यहां? राम प्रसाद की निद्रा सी टूटी और उसने कहा बेटी तुम्हारे पास मेरी जो डायरी है वो जल्दी से ले आओ। स्वाति जल्दी से गई और डायरी लाकर देते हुए कहती है कि पापा इसे तो मैंने अपनी विशेष डायरी बना लिया है। रामप्रसाद ने डायरी खोली पर वो पृष्ठ तो गायब था। रामप्रसाद गुस्से की मुद्रा में स्वाति को डायरी देते हुए बोला, "लो बना लो विशेष डायरी।"

रामप्रसाद जी डरे हुए से गुप्ता जी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी के पास पहुंचे और अनमने मन से कहा, "सर सॉरी वह कागज बिटिया ने फाड़ कर फेंक दिया।" श्री गुप्ता जी गुस्से और उदासी से चिल्लाते हुए बोले, "ई.डी.पी. में फोन लगाओ और कहो जल्दी आएं।", ई.डी.पी. अनुभाग से कार्मिक आया, उन्होंने फॉरगेट विधि से ई–ऑफिस खोला, तब जाकर फाइल गुप्ता जी को भेजी। सकपकाते हुए रामप्रसाद ने कहा ''सर फाइल आपके पास भेज दी है।'' "ओके, अरे यह क्या मेरा भी ऑफिस नहीं खुला इनवेलिड पासवर्ड बता रहा

है", दुखी मन से गुप्ता जी ने भी कहा। उन्होंने भी फॉरगेट विधि अपनाई और नया पासवर्ड बनाया तब जाकर फाइल डी.ए.जी. सर के पास पहुंच पाई। बाद में पता चला कि यह फाइल डी.ए.जी. सर से पी.ए.जी. सर के पास भी कई दिनों बाद पहुंच पाई। इस तरह की बाधाओं को देखते हुए पी.ए.जी. सर ने एक जनरल मीटिंग बुलाई। प्रत्येक स्कंध/अनुभाग से कार्मिक कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में एकत्रित हुए। पी.ए.जी. सर आए और बैठक आरंभ हुई। पी.ए.जी. सर ने कहा कि जब से ई–ऑफिस आया है और कागज रहित कार्य का आदेश आया है, हम सब एक विकट समस्या से जूझ रहे हैं। वह है– पासवर्ड का भूलना। आप सभी को यहां इसलिए बुलाया है ताकि हम यह पता कर सकें कि इसका क्या कारण है और इस समस्या का समाधान क्या है? एक कार्मिक ने कहा "सर मुख्य कारण तो यह है कि प्रत्येक कार्मिक के पास बहुत पासवर्ड हो गए हैं, जैसे कि जी–मेल का पासवर्ड, कार्यालयी ई–मेल का पासवर्ड, पी.एफ.एम.एस. का पासवर्ड, आई.टी.आर. फाइल का पासवर्ड, नेट बैंकिंग का पासवर्ड, क्रेडिट कार्ड का पासवर्ड, ई–एच.आर.एम.एस. का पासवर्ड, बायोमेट्रिक पासवर्ड और अन्य बहुत सी ऐप है जो एक कार्मिक प्रयोग करता है। सुना है वैब वी.पी.एन. अकांउट भी बनने वाला है, अब इतने पासवर्ड कैसे याद रखे।" दूसरे कार्मिक ने कहा, "पासवर्ड सेव करना भी सुरक्षित नहीं है सर।", फिर एक कार्मिक बोला, " सर किसी डायरी में लिखना भी सुरक्षित नहीं है। पिछले हफ्ते रामप्रसाद, वरिष्ठ लेखापरीक्षक अपनी डायरी घर भूल आए और उसकी छोटी बेटी ने उस पृष्ठ को फाड़ कर कहीं फेंक दिया और डायरी को स्कूल में ले गई।" एक अन्य कार्मिक ने हौसला करते हुए कहा, "सर पासवर्ड अधिक हैं, लिखना भी सुरक्षित नहीं है यह समस्या तो है ही इससे भी बड़ी समस्या है कुछ समय के अन्तराल पर पासवर्ड बदलना अनिवार्य होना। जब नए पासवर्ड बनते हैं तो पुराने और नए पासवर्ड मिक्स हो जाते हैं और बहुत भ्रम पैदा करते हैं।" यह समस्या इतनी विकट थी कि घंटों चर्चा हुई लेकिन इसका कोई हल नजर नहीं आया। अंत में पी.ए.जी. सर ने आदेश दिया कि एक सप्ताह बाद फिर इसी मुद्दे पर मीटिंग होगी। आप सब अपने अधीनस्थों से विचार विमर्श कर समाधान ढूंढें। पीएजी महोदय के साथ मीटिंग तो समाप्त हो गई, पर सभी कार्मिकों के मध्य अनौपचारिक मीटिंग्स का एक सिलसिला आरंभ हो गया। पूरे कार्यालय में यह चर्चा जोर पकड़ गई। सभी की जुबान पर एक ही प्रश्न था– पासवर्ड याद कैसे रखें?

रामप्रसाद जी अपने दिल पर बोझ लिए घर पहुंचे। उनकी पत्नी ने भी देखा कि आज तो साहब चेहरे पर उदासी का बड़ा टोकरा रखे हुए हैं। उन्होंने भी समस्या पूछने व समझाने का प्रयास किया, परंतु रामप्रसाद के मन में बार–बार यही विचार आ रहा था कि कैसे सही पासवर्ड याद रखा जा सकता है? रामप्रसाद जी यह सोचते–सोचते सो गए और जैसा कि यह सत्य है कि जब–जब व्यक्ति को निराशा घेरती है और कोई हल नजर नहीं आता तो एक ही सहारा बचता है–भगवान की शरण। सारी रात भगवान का नाम लेते–लेते रामप्रसाद को कब नींद आ गई पता ही नहीं चला। सुबह उठकर रामप्रसाद जी सीधे कार्यालय में स्थित छोटे से महादेव मंदिर में गए, माथा टेका, घंटी बजाई, पासवर्ड को बिल्कुल दिमाग में रखकर प्रार्थना की, हे! परमात्मा मुझे पासवर्ड याद रहे यही मेरी विनती है और फिर रामप्रसाद सीधे अपने अनुभाग में पहुंचे और बोले ''हे! पासवर्ड देवता खुल जा'', पासवर्ड खुल गया और रामप्रसाद जी ऐसे खुश हुए जैसे उन्हें बहुत बड़ा खजाना मिल गया। राम प्रसाद ने अगले दिन भी ऐसा ही किया मंदिर में माथा टेका अनुभाग में आए और फिर वैसे ही किया और पासवर्ड फिर खुल गया और रामप्रसाद के चेहरे पर वही खुशी थी। रामप्रसाद ने उस दिन मन लगा कर कार्य किया, पर उसे यह आश्चर्य हो रहा था कि जिस मंदिर में पूरे दिन चार या पांच बार घंटी बजती थी तथा घंटी बजने पर विवाद भी हो जाता था, उसी मंदिर में प्रत्येक 20 से 25 मिनट के अंतराल पर घंटी बज रही थी तथा कोई विवाद भी नहीं हुआ।

रामप्रसाद ने अगले दिन देखा कि मंदिर में माथा टेकने वालों की लाईन लगी है। राम प्रसाद जी को 20 मिनट लाईन में लगा रहना पड़ा। घंटी की बार–बार बजने की आवाज एक अच्छे परिवर्तन एवं खुशी का एहसास करा रही थी। प्रतिदिन उन कार्मिकों की संख्या बढ़ने लगी जो मंदिर में जाते हैं और फिर अपनी सीटों पर जाते हैं और कहते हैं कि हे! पासवर्ड देवता खुल जा और जब पासवर्ड खुलता है तो उन्हें ऐसी खुशी मिलती है जैसे कि उन्होंने बहुत बड़ी सफलता हासिल कर ली है। रामप्रसाद की खुशी और संतुष्टि दोनों में ही वृद्धि हो रही थी। उसके घर का माहौल भी खुशमय हो गया था। अगले दिन तो कमाल ही हो गया जब रामप्रसाद जी ने डी.ए. जी. सर को मंदिर से निकलते हुए देखा। रामप्रसाद जी ने संकोच में अपने एक साथी से पूछा कि तिवारी जी एक बात बताइए, डी.ए.जी. सर भी पासवर्ड भूल सकते हैं क्या?, तिवारी जी बोले, ''क्यों भैया क्यों नहीं भूल सकते हैं? वह भी तो इंसान है और फिर आज के दौर में इतने पासवर्ड हैं कि कोई भी भूल सकता है, अपने पास तो दो–चार फाइलें हैं, लेकिन डी.ए.जी. सर के पास तो पूरे विंग की फाइलें हैं, तो यह कोई बड़ी बात नहीं है।'' रामप्रसाद की खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। रामप्रसाद की संतुष्टि का स्तर यही सोचकर बढ़ गया कि यदि डी.ए.जी. सर पासवर्ड भूल सकते हैं तो मेरी क्या बिसात? धीरे–धीरे यह सिलसिला आगे बढ़ता गया। मंदिर में जाने वालों की संख्या बढ़ती गई। घंटी की गूंज अब पूरे दिन सुनाई देने लगी और इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह थी कि घंटी की ध्वनि से किसी भी कार्मिक को परेशानी नहीं थी। लगभग सभी पहले मंदिर में जाते, माथा टेकते, फिर ऑफिस में जाते, और पासवर्ड डालकर कहते ''हे! पासवर्ड देवता खुल जा और पासवर्ड खुलते ही चेहरे पर ऐसी खुशी आती, जैसे कोई दुर्लभ वस्तु हासिल कर ली हो।

पी.ए.जी. सर के आदेशानुसार सप्ताह के अंत में फिर पासवर्ड के मुद्दे पर मीटिंग हुई, मुख्य कार्मिक सम्मेलन–कक्ष में एकत्रित हो गए। पी.ए.जी. सर ने कहा अगर किसी को समाधान मिला हो तो बेझिझक कहिए। सभी आपस में फुसफुसान लगे, क्योंकि सभी ने मंदिर में जाना शुरू कर दिया था, राम प्रसाद जी वाली तकनीक सभी अपना रहे थे। पिछले तीन–चार दिन से कोई बाधा नहीं आ रही थी। इससे भी दिलचस्प यह था कि एक अधिकारी ने एक दिन पी.ए.जी. सर को भी मंदिर में जाते हुए देखा था तो कोई नहीं बोल रहा था। पी. ए.जी. जी सर को सब बातों का पता था तो सर ने मुस्कुराते हुए कहा ठीक है, मैं समझ गया। मुझे लगता है, समाधान मिल गया है। सभी ने सहमति में सिर हिलाया। पी.ए.जी. सर ने कल्याण अधिकारी को आदेश दिया कि आजकल मंदिर की घंटी लगभग बजती ही रहती है इसलिए ऐसी घंटी लगाइए जिसकी ध्वनि से काम में बाधा ना हो, कल्याण अधिकारी ने नोट कर लिया। थोड़ी देर के बाद एक कार्मिक ने हिम्मत जुटाते हुए कंपन भरे स्वर में कहा, ''सर एक विनती है'', पी.ए.जी. सर ने बीच में टोकते हुए कहा, ''कहिए वर्मा जी।'', ''सर, सभी की इच्छा है कि कार्यालय के परिसर में एक हवन हो जाए तो शुभ रहेगा'', सभी के चेहरों की ओर देखकर कहा। सभी ने एकमत सहमति जताई ''जी सर, जी सर'', पी.ए.जी. सर ने आश्यर्च की नजरों से सबको निहारा, एक पल के लिए सम्मेलन–कक्ष में चुप्पी छा गयी। पी.ए.जी. सर ने गंभीरता की मुद्रा में कहा ''ठीक है अनुमति है।'' सभी के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। मीटिंग खत्म हुई, सभी खुशी से फुसफुसाते हुए अपने–अपने अनुभागों में चले गएँ। पी.ए.जी. सर अपने कक्ष में बैठे सोच रहे हैं और मुस्कुरा रहे हैं कि तरीका चाहे कुछ भी हो, पासवर्ड देवता का मामला आध्यात्मिक भले ना हो, चाहे कोई इसे अंधविश्वास ही कहे पर इस पासवर्ड देवता वाली धारणा ने समस्या का समाधान अवश्य कर दिया। वास्तव में पासवर्ड देवता की धारणा दिलचस्प है।

कार्यालय में खुशी का माहौल है, हवन की तिथि निर्धारित की जा चुकी है। जैसे–जैसे हवन की तिथि नजदीक आ रही है वैसे–वैसे पासवर्ड देवता की चर्चा जोर पकड़ रही है। कर्मचारियों में हर्षोल्लास बढ़ता ही

जा रहा है। मंदिर में बार–बार बजने वाली घंटी अब बाधा नहीं अपितु मन को तरोताजा रखने की युक्ति बन गई है। यह संकल्पना कार्यालय परिसर से निकलकर अन्य विभागों में चक्कर लगाकर टीवी, रेडियों व समाचार–पत्र की सुर्खियाँ बन गई। सम्पूर्ण राष्ट्र में पासवर्ड देवता पर चर्चा जोर पकड़ रही है। कुछ पत्रकार तो यह भी दावा करते हैं कि पासवर्ड देवता की चर्चा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी जोर पकड़ रही है। पासवर्ड देवता भले ही विश्व के अन्य देवताओं से भिन्न है पर उसकी महत्ता भी कमाल की है।

अस्वीकरण: इस कहानी की घटनाएं, स्थान व पात्र काल्पनिक हैं। कहानी का उदेश्य केवल मनोरंजन करना है, किसी की भावना को ठेस पहुंचाना नहीं। संयोगवश समानता होने पर लेखक जिम्मेदार नहीं है।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित क्विज के दौरान प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए मुख्य अतिथि महोदया।

सुश्री नाज़ली जे. शाईन, प्रधान महालेखाकार सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों के साथ लोहड़ी का पर्व मनाते हुए।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य पर आयोजित "वॉकेथन"

कार्यालय के स्पोर्ट्स एंड रीक्रिएशन क्लब द्वारा आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट का शुभारम्भ करते हुए उप महालेखाकार (प्रशासन) महोदय।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

प्रधान महालेखाकार महोदया विभागीय पत्रिका 'सुगंधा' का लोकार्पण करते हुए ।

एन.ए.सी.आइ.एन. प्रशिक्षण के दौरान अतिथि वक्ता को सम्मानित करते हुए उप महालेखाकार महोदया।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

कार्यालय में आयोजित चैस टूर्नामेंट के दौरान प्रधान महालेखाकार महोदया प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान करते हुए ।

गणतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर प्रधान महालेखाकार बच्चों को पुरस्कार प्रदान करते हुए ।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

कार्यालय के स्पोर्ट्स एंड रीक्रिएशन क्लब द्वारा आयोजित क्रिकेट टूर्नामेंट का दृश्य।

महिला दिवस के अवसर पर रंगोली प्रतियोगिता के आयोजन का दृश्य।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

नव वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित श्री सुखमणी साहिब पाठ।

महिला दिवस के अवसर पर मानसिक स्वास्थ्य पर व्याख्यान देते हुए मनोचिकित्सक।

कविता

आज़ादी की पुकार

अर्चिता
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक पंछी पिंजरे में बंद है,
बेरंग जिंदगी का हर वो रंग है।
न कोई अपना उसके संग है,
कनक तिलियों में भी वह तंग है।
उठ रहे उसके मन में कई प्रश्न हैं,
ऐ खुदा ये कैसे बंधन हैं।
किस बात की यह सज़ा है,
बता तेरी क्या रज़ा है।

आसमान छूने की उसे चाह है,
फिर चाहे अनगिनत कांटों में राह है,
इस बात से वह अनजान है
कि उसके पंख अब बेजान हैं।

करता हर पल वह प्रयास है,
पर असफलता पर उदास है।
माना कि उन सलाखों ने न टूटने की ठानी है,
पर उसने भी कहाँ हार मानी है।
हवा के झोंकों में बसती है उसकी आस,
बिना आज़ादी के हर पल है बस एक प्यास।
जो खुद को बाँध ले हो जाए जंजीरों में बंद,
उसका क्या फायदा है खुला आसमान भी लगे तंग।
जंजीरें टूटें तो पंख फैलाएगा वह फिर,
ख्वाबों का सवेरा बनेगा, उजियारा फिर।
हर कैद में छुपी है एक आवाज, गुमसुम सी,
जो बुलाए आजादी को, वो आवाज है दुमसुम सी।

ढलते सूरज ने एक हसीन ख्वाब सजाया है,
एक नया सवेरा उसकी जिंदगी में आया है।
शायद पिंजरे को भी तरस सा आया है,
ले जाने उसे कहीं दूर खुदा ने हाथ बढ़ाया है।
आजादी का मतलब उसे आज समझ आया है।

आजादी का अर्थ है सोच की खुली राह,
जहाँ न हो दबाव, न हो कोई परवाह।
जहाँ हर इंसान को मिले अपनी बात कहने का हक,
और न हो कोई डर, न हो कोई तकदीर का शक।

तोड़ो उन बेड़ियों को जो सोच को जकड़ें,
उड़ान भरो उन आसमानों की ओर, अपने ख्वाबों को पकड़ें
आज़ादी है सम्मान, है गरिमा का संदेश,
हर दिल में जगाए एक नई उमंग का देश।
यह केवल पिंजरे से मुक्त होना नहीं है,
यह है अपने हक की रक्षा, अपने स्वाभिमान की पेश।
समझ गया वह अब अपने हिस्से का उजाला,
जिसमें छुपा है हर बंदिशों से निकलने का खजाना।
आजादी सिर्फ पंखों की नहीं, है आत्मा की पुकार,
जो हर दिल में जगे, बने जीवन का आधार।

**"विविधताओं से भरे इस देश में लगी
भाषाओं की फुलवारी है,
इनमें हमको सबसे प्यारी
हिंदी राजभाषा हमारी है।"**

गणतंत्र दिवस पर मेरी अभिलाषा

राजीव सूद
वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी

गणतंत्र दिवस का पर्व है हमने मनाया
मन में ये नये जज्बात और उमंगे लाया ।
है गणतंत्र का ये 76वां सुनहरा पर्व,
हो रहा हमें संविधान निर्माताओं पर असीम गर्व ।
इस शुभ दिन 1950 में हुआ लागू हमारा संविधान,
जिसने पहनाया हमें अधिकारों और
कर्तव्यों का नया परिधान ।

होते देख हर तरफ सामाजिक
एवम सांस्कृतिक कार्यक्रम,
खुशी से झूमे हर भारतवासी का तन और मन ।
संदेश यह देता कि हम सभी है एक समान,
मिटायें अपने भीतर से आओ घमंड और गुमान ।

इस देश की बहुमुखी प्रगति की खातिर,
आओ बनाये इसका भविष्य और भी बेहतर ।
खेल कूद, विज्ञान और तकनीक में छुई नई उचाईयां,
नाप डाली हमने आज सागर की भी गहराइयाँ ।

प्यार मोहब्बत का संदेश विश्व पटल पर है फैलाया,
देख हमारे हौंसले दुश्मन भी है थर्राया ।
अमर जवान ज्योति है जहां वीरों की याद दिलाती,
वहीं कर्तव्य पथ पर सैन्य बल देख हमारा दुनिया हिल जाती।

इस देश में अधिकारों संग कर्तव्यों की भी प्राण प्रतिष्ठा हो,
सत्य कर्म और कठोर परिश्रम की हम सभी में अतुलनीय निष्ठा हो ।
आओ इस पावन पर्व पर बढ़ाए अपने कार्यालय का भी सम्मान,
लक्ष्यों को प्राप्त कर विभाग में और ऊँची करें इसकी शान,
ताकि मिल पाए हमें विश्व स्तरीय अलग और अनूठी पहचान ।

बातों से नहीं अपने कर्मों से उन्नति का दीया जलायेंगें,
इस दीये की लौ जलती रहे इस काबिल अपने आपको बनाएगें
तभी जाकर हम सभी इस देश के सक्षम नागरिक कहला पाएगें ।
जय हिन्द, जय भारत,

तमन्ना सहगल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रशासन

जो करता है पूरे दफ्तर पर शासन,
कहते हैं उसको प्रशासन...
इसकी तो निराली है शान,
बड़ी ही बेहतरीन आन–बान
मर्जी इसकी कहते हैं होती बेहिसाब
दफ्तर में सबसे ज्यादा इसका रुआब

आवरण तो देखो इसका कितना है निराला,
बाहर से देखो तो लगता है सपना सुनहला
जरा आइए, करवाएं इस से पहचान
ध्यान से सुनिए, खोल के कान

सुबह जब निकलते हैं, होकर घर से तैयार
लगता है खुद पर, असीम जिम्मेदारियों का भार
इसका तबादला, उसकी पदोन्नति
किसी की MACP, किसी का इस्तीफा
इसमें उलझे मन से कर देते हैं घरवालों को खफा

रास्ता दफ्तरी कामों को गिनते हुए हो जाता है पार
पति देव की बातों पर ध्यान न देने से
गाड़ी में पैर रखते ही हो जाती है उनसे तकरार

दो तरफ उलझे मन से...लिफ्ट के पास
दो मिनट मिलता है आराम
इधर–उधर खड़े सहकर्मी,
करते हैं दुआ सलाम

"मैडम अच्छा हुआ आप यही गए मिल
सोच रहे थे आएंगें आज आपके पास
मिलने को कर रहा था दिल..."
सुनते ही खड़े होते हैं मेरे कान
कौनसा काम शेष है....
जिसमें अटके हैं इनके प्राण

उन्हें कहकर आइयेगा जरूर
दौड़ते कदमों से पहुँचती हूँ, अपनी सीट पर हुजूर

कॉपी में देखती हूँ पिछले दिन के लिखे हुए काम
उनमें जोड़ देती हूँ लिफ्ट के पास
मिले भाई साहब का नाम

लम्बें कामों की फेहरिस्त देखकर,
शुरू करती हूँ दिन का कारोबार
कुर्सी सीधी, गर्दन मुड़ी..,
नजर ई–ऑफिस पर बरकरार

जो फाइल्स कल भेजी थी
वो हो गयी सब क्लियर
दोबारा उन पर माथा–पच्ची नहीं करनी पड़ेगी...
खत्म हो गया फियर

फोन, इंटरकॉम और कंप्यूटर में
उलझा रहता है पूरा दिन,
बीच में कोई सहेली या दोस्त आ ये भी कहता है
"तू गिन ले अपने दिन"
32 की नौकरी हो गई, 8 की बस बाकी है,
ज्यादा कट गयी, थोड़ी रह गई,
फिर क्यों छाई उदासी है
हँसते हुए कहती हूँ "उलझी हूँ, उदास नहीं हूँ"

दफ्तर–दफ्तर करते–करते, बच्चों के पास नहीं हूँ,
सुबह आने का समय है,
घर न जाने कब जाती हूँ
इतने सब पर भी, सबको खुश न कर पाती हूँ

जिसका काम हो गया वो खुश,
जिसका आज न कर पायी, उसकी शिकायतें हैं,
जरा सोचिए...न खुद को अधिक वेतन वृद्धि,
न यात्रा भत्ता, न दे पाती हूँ और सौगात,
सारा दिन जूझ के भी.... नहीं हसीन हर मुलाकात

दफ्तर की रिपोर्ट में हमारा कोई नहीं हिस्सा,
प्रशासन में कार्यरत मेरे दोस्तों का कोई न कहे
कोई किस्सा

आप का सब काम... ATM में पैसे
वक्त पर प्रमोशन
म्यूच्यूअल ट्रान्सफर और डेपुटेशन...
सब होते हैं हासिल आपको आयाम,
क्योंकि हम सब प्रशासन वाले
मिलकर करते हैं उसके लिए काम

और विडम्बना तो देखिये...
अगर कर दें किसी के काम की तारीफ
और चाय पर दे दें निमंत्रण,
दबी आवाज में कहते हैं,
"मैडम काम तो ठीक है...पर कहीं प्रशासन में
न कर देना स्थानान्तरण"

तो दोस्तों...
प्रशासन जिम्मेदारियों का ताज है,
इसका न कोई अंत न कोई आगाज है

यही इसकी खासियत यही सौगात है,
और आज इस मंच से,
यही मेरे मन की बात है

"भारत में हर भाषा का सम्मान है,
पर हिंदी ईश्वर का वरदान है"

पांचाली की पुकार

आयुष अरोड़ा
लेखापरीक्षा

कुंठित नजरों से पूछती रही, मैं पांच पतियों की क्यों हूँ?
क्या पांच पतियों के होते हुए भी, मैं एक की भी नहीं हूँ?

मुझे वस्त्रों में नापा गया, धर्मसभा में बांटा गया,
जिन्होंने चीर बचाई मेरी, पहले क्यों चीर को फाड़ा गया?

धर्मराज मौन बैठे थे, शास्त्रों से हार गए थे,
धर्म के नाम पर कितने नर, चुपचाप मुझे हार गए थे।

मैं अग्नि से जन्मी थी, तप से नहीं, कलंक से डरती नहीं,
क्या नारी की अग्नि को बस, चुपचाप सहना चाहिए कहीं?

पाँचों ने मुझे पत्नी कहा, पर प्रेम किसने जताया था?
मेरा प्रश्न तो तब भी था, जब वध हुआ,
और जब मस्तक झुकाया था।

अगर मैं पंचकन्या हूँ, तो चरित्र किसका दाग है?
क्या पति की गलती पर भी, पत्नी ही पाप की भाग है?

मुझे सत्य चाहिए, परिभाषा नहीं,
अबला नहीं, मैं अग्नि की बेटी हूँ।

शब्दों की लक्ष्मण रेखा मत खींचो,
मैं पूरी महाभारत की भूगोल रेखा हूँ।

सीता की परीक्षा

मुझे अग्नि में झोंका गया,
पवित्रता का प्रमाण माँगा गया।
क्यों?
क्योंकि दुनिया को मेरी आंच चाहिए थी,
पर खुद उनके भीतर राख चाहिए थी।
सीता जलती रही, मर्यादा ढूँढती रही,
रामराज्य में भी खुद को खुद से पूछती रही।
पर सुनो –
आग से न नारी की अस्मिता जलती,
आग से तो केवल भीड़ की सोच जलती।
परीक्षा चाहिए तो मन की लेनी,
असली धर्म, दिल की गहराई में देखनी।
सीता को अग्नि नहीं, सम्मान चाहिए,
जन्म से नहीं, कर्म से पहचान चाहिए।

छोटी–छोटी बातें

मुकेश कुमार
सहायक लेखापरीक्षा
अधिकारी

छोटी–छोटी बातों को यूं न दिल से लगाया करो,
अगर लग जाए दिल पर तो खुली हवा में जाया करो,
थोड़ा सोच अच्छे पलों को मुस्कराया करो,
जिंदगी छोटी है वक्त न जाया करो,
छोटी–छोटी बातों को यूं ना दिल से लगाया करो।

जो अपना है उसे मांगने में कभी न शर्माया करो,
जब बात अहम् की आए तो थोड़ा झुक जाया करो,
मरना आसान है जीना मुश्किल मुश्किलों से यू न घबराया करो,
छोटी–छोटी बातों को यूं ना दिल से लगाया करो।

लोग बदलते हैं वक्त बदलता है बदलते वक्त को जिंदगी का सरमाया करो,
अगर चोट लगे और गिर जाओ गिर के फिर उठ जाया करो,
छाँव नहीं मिलेगी हर जगह कड़ी धूप हो तो प्रयासों का साया करो,
छोटी–छोटी बातों को यूं ना दिल से लगाया करो।

रूठने मनाने का मौसम बीत गया गिरकर जो उठा वो ही जीत गया
हारने वाले का कोई नहीं सिर्फ जीत को ही सलाम है
इसलिए कितनी बार भी असफल हो अनवरत प्रयास से जीत जाया करो,
छोटी–छोटी बातों को यूं ना दिल से लगाया करो।

सरकारी नौकरी

तुषार कांती सिन्हा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अतीत को संजोये रखा, यादों की फुलवारी में।
बीत गया जीवन सारा, गैरों की खातिरदारी में।।

बस्ती अपनी छोड़ के आया, नौकरी मिली सरकारी में।
चमचासन का योग किया, जीवन बीत गया चाटुकारी में।।

पदक मिले बहुतेरे, साहब की दरबारी में।
मेडल और खिताब में दीमक लग गए,
रखे–रखे अलमारी में।।

लूट–लूट कर लाई दौलत,
कौड़ी–कौड़ी लुट गई ई.डी. की छापेमारी में।
अब लगा रहा हूँ मन मैं अपना, घर और दुनियादारी में।।

व्यस्त रह रहा हूँ, नमक तेल की खरीदारी में।
काम न आते दफतर के नुस्खे, सब्जी की खरीदारी में।।

दम घुट रहा है अब तो, घर की चारदीवारी में।
दुर्दशा है उस नर की गाँव की मिट्टी छोड़ कर आया
जो नौकरी सरकारी में।।

रफ्तार

सब को आगे निकलने की पड़ी थी
साहब को मकान जाना था
व्यापारी को दुकान जाना था
किसी को मंडी से आम लाना था
एक बुड्ढे के शव को शमशान जाना था
बेचारा चार काँधे की सवारी था।
बेचारा सड़क पर धीरे–धीरे चल रहा था
साहब जोर–जोर से हॉर्न बजा रहा था
मुर्दे ने कहा, तुझे जल्दी है,
जा तू ही पहले निकल ले।
काँधा बदलने शव–यात्रा रुक गई
साहेब की कार फुर्र से आगे निकल गई
आगे चल पेड़ से टकरा गई
तेज रफ्तार साहब को खा गई
शमशान में दोनों शवों की मुलाकात हो गई
पहला शव मुस्करा कर कहा,
तू तो बड़ा शातिर निकल गया
मुझसे पहले तू यहाँ कैसे पहुँच गया?
इतनी जल्दी थी तो
मुझसे पहले तू ही मर गया होता
रफ्तार अगर कम रखी होती,
तो बेमौत मरने से बच गया होता।

अन्तर्मन

पवना देवी
लेखापरीक्षा

क्या खोजते हो दुनिया में,
जब सब कुछ तेरे अन्दर है।

क्यों देखते हो औरों में,
जब तेरा मन ही दर्पण है।

दुनिया बस एक दौड़ नहीं,
तू भी अक्स नहीं है, धावक।

रुक कर खुद से बातें करले,
अन्तर्मन को शांत तो कर ले,
सपनों की गहराई समझो।

स्वाध्याय की आदत डालो,
जीवन को तुम खुल कर जी लो।

आलस्य तुम्हारा शत्रु है तो,
पुरुषार्थ को अपना मित्र बना लो।

जीवन का ये रहस्य समझ लो,
और खुशियों से तुम नाता जोड़ो।

किस ओर जा रही है दुनिया

रुपाश शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

किस ओर जा रही है दुनिया और किस ओर जा रहे है हम
ये पता है कि कैसे इकट्ठा होगी नोटों की खेप

लेकिन ये नहीं पता कि कैसे रूकेगें बच्चियों के रेप
शेयर मार्केट ऊपर जा रही है, लेकिन मानवता का स्तर नीचे आ रहा है

घरवाले गिटार सीखने तो भेज रहे हैं, लेकिन जिंदगी जीना नहीं सिखा पा रहे हैं
आगे बढ़ने के चक्कर में, मूल चीजें भूलते जा रहे हैं

जिस धरती पर भारत भी माँ कहलाती है, वहीं रेप हुए जा रहे हैं
हमें जल्द से जल्द समझ जाना होगा, और कर्मों का हिसाब तो देकर ही जाना होगा

कहीं ज्यादा देर ना हो जाए, ये धरती पीड़ित होकर खत्म ना हो जाए
अगर की देर तो कुछ नी हासिल होगा, कर्मों का फल तो भुगत कर ही जाना होगा

हो रही है ऐसी घटनाएँ कि शर्म को भी शर्म आ जाए
डर लगता है कि कहीं आदमी ही आदमी को ना खा जाए

क्या भगवान भी ऐसे कर्मो का हिसाब कर पाते होगें
अपने बनाए इंसान की करतूतों को देख मरते जाते होगें

खुद पर राही भरोसा तो कर

दीपक सिवाच
लेखापरीक्षक

जब लोग राह पर चलते–चलते
औन्धे मुँह गिर जाते हैं
कुछ पड़े–पड़े बिलखते हैं
कुछ साहस भर के दिल में अपने
झट से यूँ उठ जाते हैं

न बन उन पत्तों जैसा
जो तेज हवा में झड़ जाते हैं
न बन उन पत्तों जैसा
जो तेज हवा में झड़ जाते हैं
तू बन उन वृक्षों जैसा
जो हर तूफ़ान से टकराते हैं

अगर जिंदा हैं आंखें तेरी
और रोज तुझे सपने आते हैं
कर गुजर उन सभी को सच
जो पलकों पर तेरी बस जाते हैं

माना मंजिल है बहुत दूर
माना मंजिल है बहुत दूर
इस भय को कर तू चकनाचूर
रख रोज राह पर एक कदम
गति तेज हो या मध्यम
पत्थर आएं कांटें आएं

पत्थर आएं कांटें आएं
या दीवार सामने चिन जाए
कर मेहनत का प्रहार तू इतना
कोई बाधा रोक न पाए

इस राह से अब पीछे क्या हटना
जब ठाना इस पर चलना
जो बिना रुके जो बिना झुके
राह अपनी बनाते हैं
पथरीले कंकड़ भी उनके लिए
सुमन हो जाते हैं

अगर सबसे आगे निकलना है
तो राह पर अकेला चलना है
मंजिल आएगी खुद चल कर
खुद पर राही भरोसा तो कर
खुद पर राही भरोसा तो कर

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल ।
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल ।।
अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन ।।"

–भारतेंदु हरिश्चंद्र

दिल की भाषा

मानसी दुबे
सुपुत्री श्री प्रमोद कुमार दुबे
वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी

हकलाते, बड़बड़ाते हुए बोले थे जो अपने मैंने पहले शब्द,
वो शब्द तो मुझको याद नहीं
गिरी लगी चोट तो ले पहुंची मां के पास शिकायत जो,
वो शिकायत तो मुझको याद नहीं
भाई से लड़ाई, बड़ी भयंकर झगड़े में क्या कहा था मैंने,
वो कहा तो मुझको याद नहीं
पिता ने जब डांटा था जोर से रोते हुए कुछ बड़बड़ाई थी क्या?
वो तो मुझको याद नहीं
कहे इन सभी वाकियों में क्या वो शब्द तो मुझको याद नहीं
पर याद है मुझको उन शब्दों की भाषा, वो भाषा हिंदी थी,
दुख था या थी खुशी, गुस्सा था या मायूसी थी
भाव थे मेरे जो भी उन भावों की वक्ता हिंदी थी

विनाश लीला

एकता
सहायक निदेशक
(राजभाषा)

सब मिट जाएगा एक दिन,
तुम भी नहीं रहोगे,
ना रहेगा यह तख़्त,
ना पेड़, ना पर्वत की शिखाएँ।

फिर किस पर इतराओगे?
किसको अपना कह पाओगे?
जब विनाश की लीला
तुम्हारी आँखों के सामने होगी,
पर देखने की क्षमता तुममें न होगी।

सभ्यता की यह गति किस ओर है
क्षणभर सोचते हो,
फिर उसी पथ पर लौट
विनाश की ओर बढ़ जाते हो।
प्रकृति से पूछा–
क्या है उसका दर्द?
क्यों रौद्र हुआ है उसका रूप?

प्रेम, संवेदना, करुणा, दया
सब खो चुके हो।
स्त्रियों पर अत्याचार के
तुम आदी हो चुके हो।
अहंकार, लोभ और मोह के वश में होकर
तुम अपनों का मन रखना भी भूल चुके हो।

जब मुझे नष्ट करने की
ठान ही चुके हो,
तो इस विनाश लीला को
कैसे रोक पाओगे?
यह तो बस एक झलक है,
अभी विकराल रूप शेष है।

क्यों नहीं समझते–
मैं केवल पेड़ों, नदियों,
पहाड़ों में ही नहीं बसती।
मुझे समझना है तो
पहले प्रेम, दया और करुणा को समझना होगा
अन्यथा तुम्हारा हर प्रयास
बेमानी होगा।

कार्यालयीन समाचार

कार्यालय में आयोजित की गई गतिविधियाँ
(अक्टूबर 2024–मार्च 2025)

राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता

कार्यालय परिसर में दिनांक 04.10.2024 को राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करवाया गया।

ब्रह्म कुमारी सेमिनार

कार्यालय परिसर में दिनांक 21.10.2024 को ब्रह्म कुमारी संस्थान के माध्यम से एक सेमिनार का आयोजन करवाया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

कार्यालय परिसर में दिनांक 28.10.2024 से 03.11.2024 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया।

ऑडिट दिवस सप्ताह

दिनांक 21.11.2024 को ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य में कार्यालय परिसर के छठे तल पर क्विज प्रतियोगिता का आयोजन करवाया तथा दिनांक 22.11.2024 को ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य में वॉकथन का आयोजन करवाया गया।

नववर्ष कार्यक्रम

कार्यालय परिसर में दिनांक 01.01.2025 को श्री सुखमनी साहिब पाठ व तत्पश्चात लंगर का आयोजन किया गया।

लोहड़ी

कार्यालय परिसर में दिनांक 13.01.2025 को लोहड़ी के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

गणतंत्र दिवस कार्यक्रम

कार्यालय परिसर में दिनांक 26.01.2025 को गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

दिनांक 10.03.2025 को कार्यालय परिसर में महिला दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

सेवानिवृत्ति

समय अपनी गति से चलता रहता है। कार्यालय में जिन्हें हम अपना प्रेरणा स्त्रोत मानते हैं, जिनके सक्षम कार्यकलापों से हम बहुत कुछ सीखते हैं, जिन्हें प्रतिदिन देखते हैं, अचानक पता चलता है कि वे सेवानिवृत्त हो रहे हैं। उनका दीर्घ अनुभव व मार्ग दर्शन अब हमें प्राप्त नहीं होगा। तब उनके सुखी व स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए स्नेह व सम्मान के पुष्प अर्पित करके ही संतोष करना पड़ता है। ''सुगंधा'' परिवार इन महानुभावों की कार्यालय के प्रति की गई सेवा के लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता है एवं उनके सुखी व समृद्ध जीवन की कामना करता है।

क्रमांक	नाम (श्री/सुश्री)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
1	अलका चोपड़ा	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.10.2024
2	परवीन भसीन	सहायक पर्यवेक्षक	31.10.2024
3	शशि कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	30.11.2024
4	शशिबाला	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (वाणिज्य)	31.12.2024
5	तरसेम कुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.12.2024
6	रामनरेश	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.01.2025
7	मंजीत सिंह	पर्यवेक्षक	31.01.2025
8	अनुराधा गुप्ता	सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	28.02.2025
9	गुरविंदर सिंह	सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	28.02.2025
10	दलबीर सिंह कत्याल	सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	31.03.2025
11	तेजिंदर पाल सिंह	पर्यवेक्षक	31.03.2025
12	सेवा सिंह	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2025

"पढ़ने व पढ़ाने में सहज है, ये सुगम है,
साहित्य का असीम सागर है ये हिन्दी।
तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है,
कवि सूर के सागर की गागर है ये हिन्दी।"

–मृणालिनी घुले

ध्वजारोहण

गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रधान महालेखाकार महोदया ध्वजारोहण करते हुए ।

रॉक गार्डन, चंडीगढ़

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

पंजाब, चण्डीगढ़ - 160017